ॐ

धर्माचार

(धर्मान्न प्रमदितव्यम्)

(भिक्षु) स्वामी हरिहरानन्द गिरि

कृत

संपादक

श्रीरामकृष्ण शास्त्री

प्रथमावृत्ति

२००३ वि०

मूल्य ॥)

प्रकाशक तथा पुस्तक प्राप्ति स्थान
स्वामी हरिहरानन्द गिरि
अनुभव चैतन्य चित्रगुप्त आश्रम
झूसी प्रयाग

मुद्रक—
प्रतापनारायण चतुर्वेदी
भारतवासी प्रेस
इलाहाबाद

ॐ

समर्पण

॥ श्रीः ॥

जिसे ज्ञान, वैराग्य प्रभृति से कोटि गुणा अधिक धर्म प्रिय है। जो अधर्माभ्युदय को मिटाकर धर्म की रक्षा निमित्त अवतीर्ण होकर जगत का कल्याण करते हैं, उसी प्रभु के मङ्गलमय चरणकमलों में यह तुच्छातितुच्छ पुष्पाञ्जलि सादर सप्रेम समर्पण करता हूँ।

॥ श्रीहरिः ॥

आत्म-निवेदन

आज भारतीय जनता बड़े ही वेग से जिस प्राचीन सभ्यता से विमुख हो उन्नति की खोज में लवलीन हो रही है, उसमें उपेक्षा करना आत्महत्या के तुल्य है; इतिहास साक्षी है कि उन्नति का एक मात्र मूल धर्म परायणता ही है, परन्तु पाश्चात्य शिक्षा से दीक्षित नर नारी "अधर्मं धर्ममिति मन्यन्ते तामसा जनाः" की नीति स्वीकार कर रही है। आज सब लोग धर्म के अन्वेषण में ही प्रवृत्त हैं, किन्तु धर्म का रहस्य जिससे जाना जाय, उस तत्व से मुख मोड़ रहे हैं, वह तत्व है शास्त्र। शास्त्र ही धर्म का निरूपण कर सकता है। कर्त्तव्याकर्त्तव्य का एक मात्र निर्णायक शास्त्र ही है।

शास्त्रीय ज्ञान का मार्ग श्रद्धापूर्वक आचार्यसेवी होना है। आज हतभाग्यतया या तो शास्त्रज्ञान का हममें पूर्ण अभाव है। या है भी तो श्रद्धाविहीन, इसका भी कारण यही है कि प्राचीन पद्धति से हम घृणा करने लगे हैं। जब कि आचार्यवान् पुरुषोवेद, मातृदेवोभव, पितृदेवोभव, आचार्यदेवोभव की वैदकी शिक्षा बालकपन में ही प्राप्ति होती थी। और सदाचार में सब ही लोग परायण रहते थे। आज सदाचार से हम घृणा या

मजाक करने लगे हैं, जिसका परिणाम चारों तरफ विनाशकारी दिखाई पड़ता है। एक समय था जब कि सदाचार की शिक्षा बालक अपनी जननी की गोद में स्तनपान के साथ ग्रहण करता था। तब व्यास अर्जुन तुल्य सन्तान पैदा होती थी और सीता सावित्री तुल्य नारी रत्न भारतभूमि को सुशोभित करती थीं; आज तो आप से कुछ छिपा ही नहीं हैं। प्रस्तुत पुस्तक सदाचार सन्ध्या, तर्पण, देवपूजा तथा वलिवैश्वदेवप्रभृति सनातन धर्म के विभिन्न परमावश्यक अङ्गों के पोषक तत्व के समर्थक तथा स्त्री पुरुष एवं समाज के कर्तव्यपथ का निदर्शक है। यद्यपि इस विषय की अनेक उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। तथापि वे अधिकतर संस्कृत में हैं। और अत्यन्त विस्तृत हैं। किन्तु सर्वसाधारण के उपयोगी एवं विस्तार रहित पुस्तक अत्यन्त अपेक्षित थी। इसी अभाव की पूर्ति के लिए निष्काम भाव एवं धर्म प्रचार की भावना से प्रेरित हो ईश्वर प्रेरणया स्वामी श्रीहरिहरानन्दगिरिजी महाराज ने "धर्माचार" नामक पुस्तक लिखकर संपादन करने के लिए मुझे प्रदान की थी, जिसका वर्तमान स्वरूप पाठकों के सामने है। यद्यपि मुझे इधर कई कारणों से अवकाश नहीं था। तथापि पुस्तकीय विषय समाजोपयोगी होने से तथा स्वामीजी के प्रेमवश मैं उनकी आज्ञा टाल न सका। जिस तरह हो सका इसका सम्पादन कर जनता जनार्दन के कर कमलों में इसको समर्पित करता हूँ, इसे पत्रं पुष्पं की भाँति विज्ञ पाठक स्वीकार करेंगे। और

अध्ययन के समय हंसतुल्य हो दोष को त्यागकर गुण को ग्रहण करें। पुस्तक अनियमित रूप से छप रही है और प्रूफ आदि देखने में अत्यन्त असावधानी सी हो रही है। तथा लेखक के अनुरोध से भाषाभावादितदनुकूल हीं रखे गये। अतः इसे एक महात्मा का प्रसाद समझ कर भावुक पाठकगण उदारतापूर्वक भाषा व्यतिक्रमादि दोषों के लिए क्षमा करेंगे।

विनीत

वैशाखी पूर्णिमा
वि० २००३

रामकृष्णशास्त्री
ती० सं० स० पाठशाला
झूसी प्रयाग

ॐ

प्राक्कथन

महर्षि सेवित परम पुनीत भारतवर्ष धर्म प्रधान देश है। यहाँ अनादिकाल से श्रुति स्मृति पुराणेतिहास प्रतिपादित धर्म का विधिपूर्वक अनुष्ठान किया जाता है और इसके द्वारा परम कल्याण भी होता है। धर्म का प्रधान अङ्ग सदाचार ही है, किन्तु आज पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध में लोग इससे विमुख हो अनेक प्रकार के कष्ट भोग रहे हैं। फिर भी उस विनाशकारी पापमय मार्ग से नहीं हटते प्रत्युत सदाचारी सनातन मार्गानुयायी स्त्री पुरुष को भी विमोहित कर धर्म मार्ग से च्युत करते हैं। इसका भी एक मात्र यही कारण है कि विधर्मी लोग अपने २ धर्म के प्रचारार्थ छोटी २ पुस्तकें सदा प्रकाशित कर साधारण जनता में कम मूल्य में ही, या बिना मूल्य ही बाँटते हैं और ठीक इसके विपरीत सनातनधर्मी लोग इस तरफ से वैराग्य या उपेक्षाकार कानों में तेल भर कर बैठे हैं। जिसका परिणाम यह हो रहा है कि विधर्मियों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है। और जो धार्मिक पुरुष अपने धर्म में स्थिर भी हैं वे विचारे धर्म कर्म के रहस्य को न जानकर भूले जा रहे हैं। इन सब लोगों के कल्याणार्थ तथा शुद्ध धर्म कर्म के अभाव में जो निस्तेज बुद्धि बल ओज रहित सन्तान आज

भारत में हो रही हैं। तथा सदाचार के अभाव में जो नास्तिकता का साम्राज्य छा रहा है, जिससे विश्व में घोर नरसंहार हो रहा है। और जिस भारत में दुग्ध की नदियाँ बहती थीं। वहीं आज अन्न के विना लाले पड़ रहे हैं। चारों ओर त्राहि त्राहि मचा हुआ है। इन सब का भी एक मात्र कारण धर्म विमुखता और ईश्वर परायणता का अभाव ही है। श्रीगुरु पूज्यपाद परमहंसशिरोमणि आजानसिद्ध श्रीमहन्तरामगिरिजी महाराज डलमऊ जिला रायबरेली के उपदेशामृत से ये सब बातें मुझे बाल्यावस्था से ही प्राप्त हुईं थीं। और श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ १००८ स्वामी सच्चिदा-नन्दगिरिजी महाराज ध्रुवेश्वर मठ काशी से सन्यास दीक्षा लेकर तथा उनके पवित्र चरणों की कृपा से इस भाव का परम पोषण तथा धारणा हुई कि जब तक धर्म एवं सदाचार का सर्वसाधारण में प्रचार नहीं होगा। तब तक देश एवं समाज का कल्याण असम्भव ही है। धर्म प्रतिपादक वेद शास्त्र पुरा-णादि सब ग्रन्थ संस्कृत में ही हैं अतः संस्कृत न जानने वाले भावुकजनों के कल्याणार्थ इस धर्माचार का विविध धार्मिक ग्रन्थों से संकलन कर दण्डी स्वामी श्री सच्चिदानन्दजी सरस्वती महाराज को दिखाया और उनकी सम्मति प्राप्त कर पण्डित श्रीरामकृष्ण शास्त्री वेदान्तचार्य के द्वारा सम्पादन कराकर भावुक पाठकों को समर्पण कर रहा हूँ। यदि इस पुस्तक से कुछ भी मनुष्यों का उपकार हुआ तो अपना परिश्रम सफल

समझूँगा। अन्यथा निष्काम कर्म करना सन्यासियों का परम कर्तव्य ही है। अतः इसे भी ब्रह्मार्पणम् के अनुसार जानूँगा। और अन्त में बाबू ओंकारप्रसादजी मु० कोठापार्चा इलाहाबाद को जिनके उदारता से पुस्तक प्रकाशित हो सकी है। एतदर्थ उनको कोटिशः धन्यवाद है।

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तुनिरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥

झूसी प्रयाग
ज्येष्ठ कृ० ४
२००३

प्रार्थी—
स्वा० हरिहरानन्द गिरि (भिक्षु)
अनुभव चैतन्याश्रम
झूसी प्रयाग

ॐ

धर्माचार

प्रथम अध्याय

ॐ नमामि विघ्नेश्वर पाद पङ्कजम्
गौरीपतिं विष्णुविधि प्रियास्पदम्
तनोमि धर्माचरणं च सद्गुरुम्
नमामि तं मार्गनिदर्शकं परम् ॥१।

१—सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते ।
आचार प्रभवो धर्मस्धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥

२—वेद विहित कर्मजन्यो धर्मः (मीमांसा)

३—यतोऽभ्युदय सिद्धिस्स धर्मः (वैशेषिकः)

४—ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णाद्विजातयः ।
श्रुतिस्मृति पुराणोक्त धर्मसयोग्यास्तु नेतरे ॥
तस्मादहरहर्वेदं द्विजोऽधीयीत् वाग्यतः
धर्म शास्त्रंतिहासादि सर्वेषां शक्तितः पठेत् ।

(व्यासः)

५—संध्या स्नानं जपो होमो देवतानां च पूजनम्
आतिथ्य वैश्वदेवश्च षट् कर्माणि दिनेदिने

भारतवर्ष सबसे श्रेष्ठ है। यहाँ चार वेद, अठारह पुराण, स्मृति, षड्दर्शन के अनुसार ही सब धर्म कर्म बर्ते जाते हैं। ईश्वराराधन सर्व भारतवर्षीय सर्व वर्णों और आश्रमियों को प्रतिदिन पूर्वाचार्यवत् करना चाहिये।

अथ नित्य कर्म विचार

प्राणिमात्र को उचित है कि सूर्योदय से घण्टा दो घण्टा प्रथम शयन से उठे। प्रथम अपनी दोनों हथेलियों के दर्शन करें, जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश निवास करते हैं। पूर्व या उत्तर को मुख कर उठे। दाहिना या बाँया जो श्वास चलता हो, उसी तरफ का पैर पहले भूमि पर रक्खें। पृथ्वी को नमस्कार करें। हाथ, मुख और पाद प्रक्षालन करके प्रातः स्मरणीय श्लोक अथवा ईश्वर के नाम उच्चारण करें। और श्रोत्रिय, वेदपाठी, अग्निहोत्र की अग्नि, उत्तम पवित्र पुरुष या ग्रामदेवता का दर्शन करें तो सब आपत्ति से छूट जाता है और विशेष कर भारद्वाज, मयूर, नकुल का वामपृष्ट में दर्शन शुभ होता है। पापी, दरिद्र, अन्धा, नकटा का दर्शन झगड़े की निशानी है तथा काक, बिल्ली, मूषक, हिजड़ा और गदहा का प्रातःकाल दर्शन न करे। अनन्तर पात्र में जल लेकर शौच (मलमूत्र) त्यागार्थ

जाना चाहिए। मलमूत्र त्यागते समय प्रातःकाल दक्षिण या पश्चिम मुख कर बैठना चाहिये। सायङ्काल पूर्व या उत्तर को मुख कर सूर्यनारायण की तरफ मुख करके न बैठे। मृत्तिका और जल से हाथ पैर लिङ्ग, गुदा की शुद्धि करे। दातून से दन्तधावन करे सोलह कुल्ला करे स्नान तर्पण सूर्यार्घ्य और देवता पूजन, स्वाध्याय, हवन, बलिवैश्वदेव, अतिथि सत्कार भोजन पूर्वोत्तर मुख बैठ कर करे। अनन्तर जीविका सम्बन्धी व्यापार वाणिज्य आदि करे।

बिना स्नान किये जो भोजन पाता है, वह अपने मल के तुल्य, बिना जप किये जो खाता है, वह रक्त के तुल्य, बिना हवन किये जो खाता है, वह कीटकृमि के तुल्य और बिना दान किये जो खाता है वह विष्टा के तुल्य है। अतःसर्वदा स्नान करके पवित्र वस्त्र धारण करके देव, ऋषि और पितृ तर्पण, देवार्चन, हवन इत्यादि कर्म करना चाहिये, यह सब कर्म मध्याह्न से प्रथम करना चाहिये। देवता, गुरु, पर स्त्री, राजा और पापी की छाया पर पैर न रक्खे, इनके आसन पर न बैठे। पर्व दिनों पर देवता व धार्मिक उत्तम ब्राह्मण गुरु के पास जाय और कुछ भेंट अर्पण करे और गुरु तथा अतिथि को बिना दिये स्वयं न भोजन करे। देव, ब्राह्मण के धन को लोभ से या अन्याय से जो हरण करता है, वह मर कर नरक जाता है और नीच योनि को प्राप्त होता है। बायें हाथ से उठाकर पानी न पीना चाहिए। व्रत करने वाला स्नान सन्ध्या तर्पणादि सायङ्काल को भी करे। देव पितृ आदि कार्य में

और अपानवायु के निसारने पर, हँसने में, मिथ्या बोलने में, बिल्ली, कुत्ता और चूहा के स्पर्श में, क्रोध के आने इत्यादि करते समय में जल से आचमन मार्जन करे। नियमित समय पर कर्म किसी कारण से न हो सके तो गौण समय पर उसी प्रकार करे। रक्त, मल, मूत्र, थूक, स्नान का बचा जल काम में न लावें। बिना कुश के सन्ध्या, बिना तिल के तर्पण, बिना दक्षिणा के यज्ञ, बिना तुलसी के विष्णु पूजा, बिना बिल्वपत्र के शिव पूजा निष्फल होता है। जो सन्ध्या नहीं जानता वह जीते शूद्र है मर कर कुत्ते का जन्म पाता है और वह द्विज कर्म के योग्य नहीं है। मस्तक पर तिलक, यज्ञोपवीत धारण, पाद धोना और आचमन जो सदा खड़े होकर करता है, वह शूद्र होता है। बहुत लम्बे काष्ठ पर, लम्बी शिला पर, नौका में, गाड़ी में और विवाह में अन्य के स्पर्श का दोष नहीं होता है। अग्नि-शाला, गो शाला, देव और ब्राह्मण के निकट जाने में, भोजन और जप के समय खड़ाऊँ त्याग देना चाहिये। स्त्री, शूद्र, पतितजन, पाखण्डी और रजस्वला से जप, होम, स्नान के समय में भाषण न करें। मन्त्र के ऋषि छन्द देवता और विनियोग को जान कर जो अध्ययन करता है या पूजन करता है, उसका उत्तम फल होता है और मन्त्र की सिद्धि होती है। स्नान काल में जल के भीतर तीन बार जो ओंकार का जप करता है, वह सब पापों से छूट कर पवित्र होता है, यही ओंकार माङ्गलिक पवित्र करने वाला धर्म बढ़ाने वाला सब काम का साधक

और परब्रह्म, सब मन्त्रों में और वेदों में नायक है। ओं ईश्वर का नाम और ईश्वर का स्वरूप है।

(अशौच) सूतक में सन्ध्या इत्यादिक का त्याग होता है। होम शुष्क अन्न अथवा फल से हो सकता है। जन्ममृत्यु के सूतक में अन्य गोत्र वाले पुरुष द्वारा केवल होम होता है, सन्ध्या, पञ्च महायज्ञ, नित्यकर्म और श्रेय कर्म दश दिन के व्यतीत होने पर ग्यारहवें दिन किये जाते हैं। दान, होम, स्वाध्याय छूट जाते हैं, उस कुल का अन्न दश दिन नहीं खाया जाता है, ब्राह्मण दश दिन पर शुद्ध होता है, क्षत्रिय बारह दिन पर वैश्य पन्द्रह दिन पर और शूद्र एक महीना पर शुद्ध होता है। स्वगोत्र, बान्धव का परदेश में मरना सुन कर तत्काल सवस्त्र स्नान करने से शुद्ध होता है। माता पिता का मरना सुनकर दश दिन पर शुद्ध होता है। गर्भ पात सुन कर जितने महीने का गर्भ हो उतने पहर सूतक रहता है। परन्तु, छः मास से अधिक गर्भ हो तो दश दिन सूतक होता है, बकरी, गौ, भैंस, ब्राह्मणी बच्चा देने से १० दिन पर शुद्ध होती है। यदि ग्राम में कोई स्त्री पुरुष मरे तो जब तक वह शरीर ग्राम से बाहर न निकाला जाय, तब तक अन्न जल न ग्रहण करे। निकाल देने पर स्नान करके अन्न जल पान करे। राहु ग्रहण दर्शन का सूतक होता है, परन्तु जल के मध्य गोशाला, विवाह, यज्ञशाला में सूतक नहीं लगता है। सूर्य ग्रहण का सूतक ४ प्रहर पहले से और चन्द्र ग्रहण का सूतक ३ प्रहर पहले से माना जाता है।

(यज्ञोपवीत की अशुद्धि पर भी आशौच होता है) यज्ञोपवीत को शौचादिक क्रिया में कान पर न चढ़ाने से, टूटने से, कमर से नीचे गिर जाने से दोनों सूतकों में चार मास बीतने पर और ग्रहण में भी यज्ञोपवीत अशुद्ध होता है। अशुद्ध होने पर नवीन धारण करे और पुराने को त्याग दे।

यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते र्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

यज्ञोपवीत त्यागने का मन्त्र

एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम् ॥

क्षौर तथा तेल लगाने पर जब तक स्नान नहीं करता तब तक अशुद्ध रहता है, क्षौर तथा तेल लगाने के नियमित दिन तथा तिथियों को जानना चाहिये निषिद्ध दिन तथा तिथियों में क्षौर तथा तेल लगाने से प्रत्यवाय होता है और प्रायश्चित्त का भागी होता है, उसके द्वारा छुए हुए कपड़े भी पहनने योग्य नहीं होते।

क्षौर करने के मुहूर्त

मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृत्तिका, ये नक्षत्र।

रवि, मङ्गल, शनिश्चर दिन रिक्ता तिथि अर्थात् चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी और षष्ठी, अष्टमी और अमावस्या इन तिथियों में रात में, सन्ध्याकाल, भद्रा, व्यतिपात, गन्डान्त योग में भोजन के अन्त में, गोशाला में, और विना आसन के पृथ्वी पर क्षौर नहीं करना चाहिए। परन्तु दाह कर्म और सूतकान्त यज्ञ दीक्षा में मुहूर्त की आवश्यकता नहीं है साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक क्षौर होता है। पिता के जीते हुए मूँछों को नहीं बनवाना चाहिए। बिना किसी निमित्त के सर्वाङ्ग का मुंडन न करावे यह सब सदाचार कहलाता है, जो कि धर्म का प्रधान अङ्ग है। सदाचार विहीन पुरुष को वेद तप अग्निहोत्र आदि पवित्र नहीं कर सकते। आचार से युक्त पुरुष धन धान्य स्वर्ग मोक्ष को प्राप्त करता है। अतः सबको सदाचार रूपी धर्म का पालन करना आवश्यक है और आचारहीन से दूर रहना चाहिये। क्योंकि वह निन्दनीय है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास चार आश्रम हैं। जिस आश्रम में रहे, उस आश्रम के नियम को विधिवत् पालन करना चाहिये। सतयुग में जप, तप प्रभृति धर्म का पालन करने से जो फल दस वर्ष में प्राप्त होता था और त्रेता में एक वर्ष तथा द्वापर में एक महीने में होता था कलियुग में श्रद्धायुक्त विधिपूर्वक करने से २४ घण्टे में (दिन रात में) वही फल प्राप्त होता है। ऋग् यजु सामवेदीय कर्म को श्रौत कहते हैं। और धर्म शास्त्र विहित कर्म को स्मार्त कहते हैं। हिन्दूमात्र का कर्तव्य है कि श्रौत स्मार्त कर्म को अवश्य करे।

द्विजातिमात्र के मुख्य १६ संस्कार श्रौत स्मार्त विहित हैं अतः ये अवश्य होने चाहिए, जिनके बिना द्विज संज्ञा ही नहीं होती, जो कि निम्नलिखित हैं—

१—गर्भाधानं २—पुंसवन ३—सीमन्त ४—जातकर्म ५—नामकरण ६—निष्क्रमण ७—अन्नप्राशन ८—चूडाकर्म ९—कर्णवेध १०—यज्ञोपवीत ११—वेदारम्भ १२—समावर्तन १३—केशान्त (गोदान) १४—विवाह १५—चतुर्थी कर्म १६—अन्त्येष्टि ये शास्त्रीय सोलह संस्कार विधिवत् होने चाहिए।

गृहस्थ का साधारण नियम

गृहस्थ का स्नान, दान, पूजन, व्रत, यज्ञादि बिना संकल्प निष्फल होता है। इसलिए जलादि अञ्जलि में लेकर संकल्प करना चाहिये। अथवा मानसिक संकल्प कर लेना चाहिये। सन्यासी सब कर्म संकल्प रहित करता है निष्फल कर्म नहीं करना चाहिए। बिना प्रयोजन नृत्य गीत बाजा न करे और न वहाँ जाय, जहाँ ये होते हों। रात को दूसरे गाँव में न जाय। न दौड़े। जल में मुख न देखे। वृक्ष पर न चढ़े। नङ्गे स्नान न करे। विषम स्नान और वस्तु को न नाँघे। कटु वचन न बोले। उदय और अस्त होते हुए सूर्य को न देखे। खड़े खड़े मल मूत्र त्याग न करे। कटा फटा और मैला वस्त्र न धारण करे। सब के साथ मित्र भाव से रहे। पर स्त्री, शूद्र, मुर्दा, काला पक्षी, कुत्ता का दर्शन राग पूर्वक न करे। कड़ी धूप में मल मूत्र

का त्यागना थूकना मना है। सदा सत्य बोले। सदा अपने नित्य नैमित्तिक कर्म में लगा रहे। जो मोह त्या प्रमाद बस स्वधर्म कर्म का त्याग करता है वह पतित हो जाता है। अतः देव पितृ कार्य अवश्यमेव करे इसका विशेष वर्णन आगे चल कर करेंगे।

सभी को यथासम्भव ब्राह्ममुहूर्त में ही उठना चाहिये और सर्व प्रथम इन माङ्गलिक श्लोकों को पढ़ना चाहिए।

प्रातः स्मरण श्लोक

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमि सुतोबुधश्च।
गुरुश्चशुक्रः शनि राहु केतवः कुर्वन्तुसर्वे मम सुप्रभातम् ॥१॥
भृगु व शिष्ठः क्रतुरङ्गिराश्च मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।
रैभ्यो मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः कुर्वन्तु सर्वे ममसुप्रभातम् ॥२॥
सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलौच।
सप्तस्वराः सप्तरसातलानि कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥३॥

अश्वस्थामा बलिर्व्यासो हनुमाश्च विभिषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥
सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद्वर्ष शतं सोऽपि सर्व व्याधि विवर्जितः॥
अहल्या द्रौपदी तारा सीता मंदोदरी तथा।
पञ्चकन्यास्मरेन्भित्यं महापातक नाशनम्॥

कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहु सहस्रवान् ।
तस्यस्मरण मात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते ॥
विश्वेशं माधवंढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥

इन श्लोकों से स्तुति कर यथाशक्ति भगवन्नाम लेवे । इसके वाद शौचादि जाये । मलमूत्र करते समय सिर कान वस्त्र से बन्द रखना चाहिए । जनेऊ दाहिने कान पर चढ़ाकर २-३ फेरा लपेटते हैं कोई २ सिर पर चढ़ाकर दोनों कानों में लपेट लेते हैं । जलाशय, तीर्थ, नदी में शौच न करे । पात्र में जल लेकर सौ हाथ दूर मल मूत्र त्यागना चाहिए । काष्ट तृण मट्टी से गुदा पोंछकर जल से धोवे । धारा से शौच न करे । चुल्लू से जल गुदा में छोड़े । शौच का बचा हुआ जल मूत्र के तुल्य है । शुद्ध मिट्टी लेकर १ बार लिङ्ग में दो बार गुदा में सात बार हांथ पैर मृत्तिका व जल से धोवे । रात्रि में इससे आधा शौच करे । जल के भीतर की मिट्टी वल्मीक (दीमक या कीड़ों की माँटी) देव घर, मूषक घर की न लेवे । गङ्गा की मिट्टी या गोबर से शौच न करे । मूत्र त्यागने पर ४ कुल्ला, मल त्यागने पर १६ कुल्ले और भोजनान्त में ८ कुल्ले करे । बिना लाँग बाँधे जो पैदल चलते हैं, उनको सुरापान का दोष लगता है । मैथुन में और मलमूत्र त्यागते समय, दातून के समय, श्राद्ध और भोजन काल में दोनों सन्ध्या में, जप में पितृकार्य में, देवकार्य में तथा गुरु के निकट, दान देते समय में मौन धारण

करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। दाँत और जिह्वा की सफाई अवश्य करना चाहिए। इससे आयु, बल, यश और बुद्धि की प्राप्ति होती है। दातून करञ्ज था गूलर, आम, कदम्ब, लोध्र, चम्पक, बदरी, अपामार्ग, नीम, वट, बन्धूक (महुआ) अर्क, मौलश्री, इमली, सिहोर, अनार, मेंचड़ी, ककुम, अकहर इत्यादि की उत्तम होती है। १२ अंगुल की कनिष्ठका के बराबर मोटी गाँठ रहित होनी चाहिए। शहद अथवा तेल नमक के चूर्ण से दाँतों को शुद्ध करे। दन्त के माँस में बाधा न पहुंचे। मुख की दुर्गन्धि निरसता सूजन का हरण, तेल के कुल्ला से, दूधदार वृक्ष तथा कसैले वृक्ष की हरी दातून से दाँत मजबूत होते हैं। और शीतल जल से आँख धोवे। दातून के अभाव में अथवा दातून निषिद्ध दिन में, तृण, पत्ता जल और मध्यमा अँगुली से दन्त धवन करे। अँगुली से मिट्टी, पत्ता, कोयला, भस्म और लोहा से सर्वदा दाँतों को न धोवे। परीवा, अमावस्या, षष्ठी, नवमी, रविवार को दातून करने से ७ कुल का नाश होता है। तथा दोनों अष्टमी चतुर्दशी अमावस, व्यतीपात, संक्रान्ति में दातून न करे। पूर्व मुख दातून करने से धृति, सौख्य आरोग्यता की प्राप्ति होती है। ईशान कोण में करने से कामना की सिद्ध होती है। दक्षिण में कष्ट होता है और पश्चिम में पराजय। उत्तर में करने से स्त्री गौ का नाश होता है। दातून करके १२ कुल्ला करे।

अध्याय २

स्नान

ऊख, जल, कन्द, दूध, ताम्बूल, औषधि प्रभृति पदार्थों को खाने के बाद भी स्नान पूजन देव पितृ कर्म किया जा सकता है। प्रातः स्नान से तेज, बल, शौच, आयु, आरोग्य, अलोलुपता, दुःस्वप्न नाश, यश, मेधा, रूप, आदि गुण प्राप्त होते हैं। सूर्योदय से दो घड़ी पूर्व (ब्राह्म मुहूर्त में) तीर्थ, नदी, देवकुन्ड अथवा कूप या घर पर तिल गन्ध, अक्षत पुष्प कुश इत्यादि सहित स्नान करे तो पापों का नाश होता है और जपादि कर्मों का अधिकारी होता है। प्रातःस्नान विना किये जप होमादि कर्म न करे यदि करे तो निष्फल होते हैं। सर्व क्रियाओं का मूल स्नान ही स्मृति में कहा गया है। तीर्थों के अभाव में और आतुर अवस्था में गर्म जल से ही करे। नैमित्तिक, सकाम, स्नान सदा शीतल जल से ही करे। संक्रान्ति, रविवार, सप्तमी ग्रहण आदि पर्वों में तथा जन्म दिन और माता पिता के श्राद्ध के दिन स्वस्थ अवस्था में गर्म जल से स्नान न करे। देश, काल शारीरिक शक्ति के

विचार से स्नान ७ प्रकार का कहा गया है। १—आपो हिष्ठा त्र्यम्बकादि मन्त्रों द्वारा स्नान **मन्त्र** स्नान कहा जाता है। २—पवित्र मृत्तिका का लेपन करना **भौम** स्नान है। ३--भस्म से स्नान करना **भस्म** स्नान कहलाता है। ४—गौ की धूलि से स्नान करना **गोरज** स्नान कहलाता है। इसे वायव्य स्नान भी कहते हैं। ५--आतप वर्षा में किया गया स्नान **दिव्य** स्नान कहलाता है। ६—जल में अवगाहन करना वरुण स्नान है। ७—आत्म चिन्तन स्नान **मानसिक** है। ८--आर्द्र वस्त्र से शरीर मार्जन करना **कपिल** स्नान है। ९—कुश जल मन्त्र से मार्जन करना **ब्राह्म** स्नान कहलाता है। १०--विष्णु चिन्तन करना **यौगिक** स्नान है। ११—रोगी होने के कारण शिर से स्नान करना और आर्द्र वस्त्र से शरीर पोछना तथा मार्जन करना **दैहिक** स्नान कहलाता है। कर्मीजनों तथा अनासक्त के लिए यह उचित है वर्षा का जल यदि तृण पत्ते मैलाकुचैला या विषयुक्त हो तो स्नान पान न करे। शरीर के भीतर बाहर रोग उत्पन्न होते हैं शूद्र के जल से, मेघ के जल से और वर्षा के जल से आचमन, दान, देव पितृ तर्पणादि न करे। यदि प्रमाद से शूद्र का जल पीवे तो बिल्व, पद्म, पलाश और कुश के जल को पीकर पवित्र होता है। चाण्डाल के निर्मित कूप तड़ाग आदि में स्नान य पान करे तो पञ्चगव्य से शुद्ध होता है। गङ्गादि समुद्र गामिनी नदियों को छोड़कर और सब नदियाँ सावन और भादों में रजस्वला होतीं हैं इनमें स्नान न करना चाहिए। आठ हजार

धनुष से अधिक जिनका प्रवाह नहीं है वे गर्तकुण्ड कहे जाते हैं। धनुष का परिमाण चार हाथ होता है। उपाकर्म, श्रावणी, उत्सर्ग, (उद्यापन) प्रेत स्नान चन्द्र सूर्य ग्रहण के समय पर रजस्वला दोष नहीं माना जाता। समुद्र गामिनी या अन्य नदियों में प्रवाह की तरफ मुख करके स्नान करे। तड़ाग, कूप और घर में सूर्य की तरफ मुख करके स्नान करे। घर के जल से मार्जन तथा तर्पण न करे। नदी तड़ागादि पर जा कर प्रथम: हाथ पैर धोवे। पश्चात् मुख और यज्ञोपवीत धोवे। ३ कुल्ली करेफिर २ कुशा दाहिने हाथ ३ कुशा बायें हाथ पैर के तले और शिर पर एक एक धारण करे। (प्राणायाम करे) नारायण का स्मरण तीर्थों का आवाहन तथा प्रार्थना करे। अथवा तीन बारओंकार मन में स्मरण करता हुआ सर्वाङ्ग स्नान करे। शुद्ध प्रक्षालित धुले हुए वस्त्र धारण करते समय आर्द्र वस्त्र नीचे न गिरावे। किन्तु कटि से ऊपर निकाल कर रक्खे। यदि जंघा से नीचे की ओर गिरा देता है, तो पुनः स्नान करके शुद्ध होता है। शिर रोगी, जटाधारी पति के सहित स्त्री को चन्द्र सूर्य ग्रहण संक्रान्ति आदि पर्व के दिनों में गले तक भी स्नान करना फलदायक होता है सर्वाङ्ग स्नान शिर से उत्तम होता है। संकल्प पूर्वक स्नान दान उत्तम होता है। यथा ओ३म् तत्सद-द्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्निद्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेत वाराह कल्पे वैवस्व मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बू द्वीपे भतरवर्षे अमुकक्षेत्रे अमुकऋतौ अमुकराशिस्थितेसूर्ये अमुक

राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्नानस्थितेषु सत्सु अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक शर्मा वर्मादि अमुकनामा कायिक वाचिक सांसर्गिक कृताकृत ज्ञाताज्ञात अभक्ष्याभक्ष्यादि सकल पापनाशपूर्वकं श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं अमुकनद्यां स्नानमहंकरिष्ये।

आवाहनम्

पुष्करााद्यानि तीर्थानि, गङ्गाद्याः सरितस्तथा ।
आगच्छन्तु पवित्राणि, स्नान काले सदा मम ॥
गङ्गे च यमुनेचैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु ॥
त्वं राजा सर्व तीर्थानां त्वमेव जगतः पिता ।
याचितं देहि मे तीर्थ ! तीर्थराज नमोऽस्तुते ॥

नमामि गङ्गे तव पादपङ्कजम् ।
सुरासुरैर्वन्दित दिव्यरूपम् ।
भुक्तिञ्च मुक्तिञ्च ददासि नित्यं ।
भावानुसारेण सदा नराणाम् ॥

इस प्रकार प्रार्थना करके स्नान करे।

इसके बाद कुश हाथ में लिए हुए स्नानाङ्ग तर्पण करे पूर्वाभिमुख हो देवताओं को एक एक अञ्जलि जल देवे।

ॐ ब्रह्मादयोदेवास्तृप्यन्ताम्, ॐ भूर्देवास्तृप्यन्ताम् ॐ

भुवोदेवास्तृप्यन्ताम् ॐ स्वर्देवास्तृप्यन्ताम् ॐ भूर्भुवः स्वर्देवास्तृप्यन्ताम् ।

उत्तर मुख हो दो दो अञ्जलि ऋषियों को देवे ।

ॐ सनकादि द्वैपायनादयो ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॐ भू ऋषयस्तृ० ॐ भुव ऋषयस्तृ० ॐ स्व ऋषयस्तृ० ॐ भूर्भुवः स्व ऋषयस्तृ०

दक्षिणाभिमुख होकर तीन तीन अञ्जलि पितरों को देवे ।

ॐ कव्यवाड् नलादयः पितरस्तृ० ॐ भूः पितरस्तृ० ॐ भुवः पितरस्तृ० ॐ स्वः पितरस्तृ० ॐ भूर्भुवः स्वः पितरस्तृ० ।

अध्याय ३

सन्ध्या

अनन्तर शुद्ध वस्त्रोपवस्त्र धारण कर और विभूति लगा कर शुद्ध आसन पर बैठ कर सन्ध्या करे। क्योंकि द्विजातिमात्र को सन्ध्या अवश्य करनी चाहिए। द्विजमात्र के प्रत्यवाय के निवारणार्थ तथा पावनार्थ परमात्मा ने सन्ध्या उत्पन्न की है। दिन अथवा रात्रि में जो कुछ अज्ञानवश प्रत्यवाय कर्म हो जाते हैं वे त्रिकाल सन्ध्या से नष्ट हो जाते हैं। जो तीन दिन तक सन्ध्या नहीं करता वह जीते जी शूद्र के तुल्य हो जाता है और मर कर कुत्ता होता है। सन्ध्याहीन पुरुष सब कर्मों के अनधिकारी हैं तथा उनके किये हुए कर्म निष्फल होते हैं। सन्ध्या में सोना चाँदी या ताँबे के एक आचमनी एक पञ्चपात्र एक अर्घा ये तीन पात्र होने चाहिए। कुशा कम्बल मृग चर्म के आसन उत्तम होते हैं। काले मृग चर्म से ज्ञान की सिद्धि, व्याघ्र चर्म से लक्ष्मी तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है। सन्ध्या और गायत्री का जप यथा सम्भव एकान्त तथा निरुपद्रव स्थान में यथा नदी के किनारे गोशाला में व बनादि में करना चाहिए। जप होम के समय खड़ाऊँ या जूता नहीं पहनना चाहिये। स्वस्तिक, पद्म, भद्र प्रभृति सुखासन से पूर्व या उत्तर मुख बैठ कर सन्ध्या जप प्रभृति देव कर्म करने चाहिए। सन्ध्या प्रातःकाल मध्याह्न और सायङ्काल करे। दो बार तो अनिवार्य ही करना चाहिये।

अध्याय ४

भस्म धारण किये विना सर्व क्रिया व्यर्थ है अतः भस्म अवश्य लगावे। भस्म के द्वारा त्रिपुण्डधारी पुरुष मृत्यु को जीतता है और उसके पास तक पाप भूत पिशाचादि नहीं आते। भस्म के अभाव में गङ्गा की मृत्तिका (मिट्टी) या जल से त्रिपुण्ड या ऊर्ध्वपुण्ड धारण करे। भस्म से त्रिपुण्ड ही लगावे। मध्याह्न से पहले जल युक्त और मध्याह्न के उपरान्त शुष्क भस्म लगावे। अग्निहोत्र, विरजाहोम यज्ञ हवन की भस्म उत्तम है। ललाट, ग्रीवा, बाहू, छाती हृदयादि स्थानों पर मध्य की तीन अंगुलियों से भस्म लगावे।

भस्म लगाने का मन्त्र

अग्निरिति भस्म इत्यादि मन्त्र अथवा शिव पञ्चाक्षर या त्र्यम्बकं यजामहे या अष्टाक्षर अथवा गायत्री या प्रणव से ही त्रिपुण्ड धारण करे। शिवमन्त्र और ब्रह्म मन्त्र से शिवलोक की प्राप्ति, अष्टाक्षर से विष्णुपद, गायत्री से सूर्य लोक और प्रणव से ब्रह्मरूप की प्राप्ति होती है। बाँयें हाथ की हथेली पर भस्म रखकर दाहिने से मन्त्र द्वारा लगावे।

अध्याय ५

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष माला और भस्म जिसके शरीर में धारण किया हुआ रहता है वह चण्डाल भी पूज्य है और सब वर्णों में उत्तम है। अभक्त या नीच से नीच हो तो भी रुद्राक्ष व भस्म द्वारा सब पापों से छूट जाता है जो रुद्राक्ष सर्वदा धारण किये रहता है, उसको देवता भी वन्दना करते हैं। शङ्ख, कमल, मणि, कुशग्रन्थि, रुद्राक्ष, मूँगा, स्फटिक, तुलसी, सुवर्ण और चन्दन की माला धारण करनी चाहिए, इनमें रुद्राक्ष की महिमा अधिक है। १०८ दाने की माला उत्तम ५४ की मध्यम और २७ दाने की माला अधम कही जाती है। अनामिका मध्यमा और अंगुष्ठ से ही माला जपे। तर्जनी का स्पर्श न होने दे। सुमेरु तक ही जप करे। सुमेरु का उल्लङ्घन कदापि न करे। पुनः माला को उलट कर जपे। स्नान, होम, जप, दान, स्वाध्याय, पितृकर्म, सन्ध्या प्रभृति कर्मों में कुश की पवित्री दोनों हाथों की अनामिका अंगुली में धारण करे। कुश के अभाव में दूब या सोना चाँदी की पवित्री प्रणव या गायत्री मन्त्र से धारण करे। इसके अनन्तर गायत्री मन्त्र से शिखा में ग्रन्थि लगावे। स्नान दान, देवार्चन आदि कर्मों में ग्रन्थि अवश्य लगावे। शौच, शयन, मैथुन भोजन और दातून के समय शिखा की गाँठ खोल देवे।

अध्याय ६

अथ सन्ध्याविधिरारभ्यते

इस मन्त्र से कुशा से अपने ऊपर जल छिड़के।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

नीचे लिखे मन्त्र से पृथ्वी पर जल छिड़के।

॥ विनियोगः ॥

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः।

॥ अथ मन्त्रः ॥

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

इस प्रकार संकल्प करे—

ॐ ममोपपातकदुरितक्षयपूर्वकब्रह्मावाप्त्यै प्रातःसन्ध्योपासनमहं करिष्ये।

गायत्री मन्त्र पढ़ के चुटिया बाँधे। अनन्तर तीन आचमन करे। आचमन के तीन मन्त्र ये हैं:—

(१) ॐ केशवाय नमः। (२) ॐ नारायणाय नमः। (३) ॐ माधवाय नमः। (४) ॐ हृषीकेशाय नमः।

इस चौथे मन्त्र को उच्चारण कर हाथ धो डाले ; नीचे लिखे मन्त्र से हाथ को जल से पवित्र करके फिर तीन आचमन करे। उसका विनियोग और मन्त्र यह है:—

॥ विनियोग: ॥

ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्द: भाववृतं दैवतमश्वमेधावभृथे विनियोग: ।

॥ अथ मन्त्र: ॥

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत, ततो रात्र्यजायत तत: समुद्रो अर्णव: समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्व्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथ्वीं चांतरिक्षमथो स्व:।

गायत्री मन्त्र पढ़कर अपने चारों ओर जल छिड़के उपरान्त प्राणायाम के लिए ऋषि और देवता आदि का स्मरण करे। यथा: –

॥ विनियोग: ॥

ॐ कारस्य ब्रह्माऋषिर्गायत्रीच्छन्दोग्निर्देवता शुक्लो वर्ण: सर्वकर्म्मारम्भे विनियोग: ।

ॐ सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती पंक्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्यबृहस्पति वरुणेन्द्रविश्वे-देवा देवता अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोग: ।

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीच्छन्द: सविता देवता-ग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोग: ।

ॐ शिरसः प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिपदा गायत्रीच्छन्दो ब्रह्माग्निवायु सूर्य्यो देवता प्राणायामे विनियोगः।

अब आसन बांध आँख मूंद मौन हो नासिका के दाहिने छिद्र को अंगूठे से मूंद चतुर्भुज श्यामसुन्दर भगवान को अपने नाभि कमल में ध्यान करे और तीन वार मन्त्र को पढ़े। पढ़ने में जितना समय लगे तब तक नासिका के वाएं छिद्र से श्वास खींचे उपरांत श्वांस रोककर अपने ही हृदय में कमल के आसन पर बैठे हुए रक्तवर्ण चतुर्भुज ब्रह्माजी का ध्यान करे और तीन बार उसी मन्त्र को पढ़े, उपरान्त अपने माथे में श्वेत वर्ण त्रिनेत्र शिवजी का ध्यान करे और उसी मन्त्र को तीन बार पढ़े और मन्त्र पढ़ने में जितना समय लगे तब तक नासिका के दाहिने छिद्र से श्वास को धीरे धीरे छोड़े।

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ महः, ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यम्, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

इसके उपरान्त सूर्यश्च इस मन्त्र को विनियोग सहित पढ़ के तीन आचमन करे।

॥ विनियोगः ॥

ॐ सूर्य्यश्चमेति ब्रह्मा ऋषिः प्रकृश्चिन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

॥ अथ मन्त्रः ॥

ॐ सूर्य्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्राज्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहममृतयोनौ सूर्य्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥

उपरान्त आपोहिष्ठा इत्यादि इस मन्त्र के नव भागों में से सात को पढ़कर सिर पर, आठवें से पृथ्वी पर और फिर नवें से सिर पर जल छिड़के।

॥ विनियोगः ॥

ॐ आपो हिष्ठेत्यादि त्र्यृचस्य सिन्धुद्वीपऋषिर्गायत्रीच्छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

॥ अथ मन्त्रः ॥

१ ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः। २ ॐ तान ऊर्ज्जे दधातन। ३ ॐ महेरणाय चक्षसे। ४ ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५ ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६ ॐ उशतीरिव मातरः। ७ ॐ तस्मा अरङ्गमामवः। ८ ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९ ॐ आपो जनयथा च नः।

तब हाथ में जल लेकर तीन बार द्रुपदादिव इत्यादि मन्त्र को पढ़ जल को माथे में लगावे।

॥ विनियोगः ॥

ॐ द्रुपदादिवेति कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः ।

॥ अथ मन्त्रः ॥

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव पूतं पवित्रेणे-वाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ।

उपरान्त हाथ में जल लेकर नाक में लगावे और श्वास को शक्ति के अनुसार रोके रहे। तीन वा एक बार "ऋतञ्च सत्यञ्च" इस मन्त्र को पढ़े और ध्यान करे कि "यह जल नासिका के दाहिने छिद्र के भीतर जा कर अन्तःकरण को शुद्ध कर बाएँ नासिका के छिद्र से बाहर आया है।" तब उस जल को न देख कर बाईं ओर पृथ्वी पर पटके।

॥ विनियोगः ॥

ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षणऋषिरनुष्टुप्छन्दः भाववृतो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः ।

॥ अथ मन्त्रः ॥

"ॐ ऋतञ्च" इत्यादि मन्त्र पहिले लिखा है।

अब हाथ में जल लेकर अन्तश्चरसि इस मन्त्र को पढ़कर आचमन करे।

॥ विनियोगः ॥

ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

॥ अथ मन्त्रः ॥

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्।

अब खड़ा हो गायत्री मन्त्र पढ़ के जल में गंधाक्षत और पुष्प डाल सूर्य को अर्घ देवे। तब एक पैर से खड़े होके अँजलि बाँध के आगे लिखे हुए चार मन्त्रों से सूर्य का उपस्थान करे।

॥ विनियोगः ॥

ॐ उद्वयमित्यस्य हिरण्यस्तूपऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उदुत्यमिति प्रस्कण्वऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ चित्रमित्यस्य कौत्सऋषिस्त्रिष्टुपूछन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ तच्चक्षुरित्यक्षरातीतपुरउष्णिक्छन्दो दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः सूर्य्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

॥ अथ मन्त्रः ॥

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय-सूर्यम् ॥

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याऽग्नेः।

आप्रा द्यावापृथ्वी अन्तरिक्ष ँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।

उपरान्त आगे लिखे मन्त्रों से तीन वार अङ्गन्यास करे अर्थात् इसे पढ़कर हृदय, शिर, शिखा, दोनों भुजा, दोनों नेत्रों को छुए और "अस्त्रायफट्" कह कर अपने चारों ओर चुटकी बजावें इसी प्रकार तीन आवृत्ति करे।

ॐ हृदयाय नमः । ॐ भूः शिरसे स्वाहा । ॐ भुवः शिखायै वषट् । ॐ स्वः कवचाय हुम् । ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट् । ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् ।

तब गायत्री के ऋषि आदि को आगे लिखे हुए विनियोग आदि से स्मरण करे यथा—

ॐ कारस्य ब्रह्मार्षिर्गायत्रीपछन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णो जपे विनियोगः ।

ॐ त्रिव्याहृतीनां प्रजापतिऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्नि वाय्वादित्या देवता जपे विनियोगः ।

ॐ गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवताग्निमुखमुपनयने जपे विनियोगः ।

अब आगे लिखे हुए मन्त्र के अनुसार गायत्री का ध्यान करे ।

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता। आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताऽथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।

उपर्युक्त मन्त्र के अनुसार गायत्री का ध्यान करके नीचे लिखे मन्त्र से गायत्री का आवाहन करे। यथा—

॥ विनियोगः ॥

ॐ तेजोसीति देवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्रीच्छन्दो गायत्र्यावाहने विनियोगः।

॥ अथ मन्त्रः ॥

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानाम नाधृष्टं देवयजनमसि।

ॐ बालां विद्यान्तु गायत्रीं लोहितां चतुराननाम्। रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्षसूत्रकरां तथा। कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहनसंस्थिताम्। ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम्। मंत्रेणावाहयेद्देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात्।

इसके उपरान्त आगे के मन्त्र से प्रणाम करे मन्त्र यह है—

ॐ तुरीय पदस्य मेरु पृष्ठ ऋषिर्मनुः परमात्मा देवता मोक्षार्थे जपे विनियोगः।

॥ अथ मन्त्रः ॥

गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसिनहि पद्यसे

नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परो राजसे॰ सावदोमाप्रापत् ॥ १ ॥

उपरान्त सवेरे पूर्व की ओर दोपहर को सूर्य की ओर और संध्या को पश्चिम की ओर मुँह कर एकाग्रचित्त होकर ध्यान लगाए हुए मन में स्पष्ट स्पष्ट मन्त्र के वर्णों का उच्चारण करता हुआ और उसके अनुसार ध्यान करता हुआ गायत्री का जप करे जपने में गायत्री मन्त्र का स्वरूप ऐसा है।

॥ गायत्री स्वरूपम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नःप्रचोदयात् ॐ ॥

जो (सविता) सूर्य हम लोगों की बुद्धि अर्थात् कर्मों की प्रेरणा करे उस (सविता) सबके उत्पन्न करनेवाले (देव) प्रकाशमान का जो सबको दीख पड़ता है इससे प्रसिद्ध (वरेण्य) सबसे भजन करने योग्य (भर्ग) पापों के नाश करनेवाले तेज का ध्यान करते हैं अर्थात् मन में धारण करते हैं। जप करके प्रणाम करे और आगे लिखे मन्त्र से विसर्जन करे।

॥ अथ मन्त्रः ॥

ॐ उत्तमे शिखरे देवि भूम्यां पर्वतमूर्द्धनि। ब्रह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम्।

॥ इति प्रातःसन्ध्याप्रयोगः ॥

॰ सावदोमाप्रापत् न पढ़ना चाहिये केवल परो रजसे तक पढ़े।

॥ मध्याह्न सन्ध्या में ॥

प्राणायाम के उपरान्त आचमन के लिए (सूर्यश्चमा०) के बदले नीचे लिखा मन्त्र पढ़े।

॥ मध्याह्न आचमन मन्त्रः विनियोग सहितः ॥

ॐ आपः पुनन्त्विवतिविष्णुऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ आपः पुनन्तु पृथ्वीं पृथ्वी पूता पुनातु मां पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्टभोज्यञ्च यद्वा दुश्चरितम्मम। सर्वम्पुनन्तु मामापोऽसताञ्च प्रतिग्रहं‌ं स्वाहा ॥ १ ॥

॥ सायं सन्ध्या में ॥

प्राणायाम के उपरान्त आचमन के लिए इस मन्त्र के बदले इस मन्त्र को विनियोग सहित पढ़कर आचमन करना चाहिये।

॥ सायमाचमन मन्त्रः विनियोग सहितः ॥

ॐ अग्निश्चमेति रुद्रऋषि; प्रकृतिश्छन्दः अग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु यत् किञ्चिद् रितं मयि इदमहममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

॥ इति ॥

तर्पण

आचमन=केशवायनमः नारायणायनमः माधवायनमः। प्राणायाम करे।

ॐ अपवित्रः पवित्रोवासर्वावस्थङ्गतोऽपि वा यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सवाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

संकल्प=ॐ तत्सतपरमेश्वर प्रीत्यर्थे श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्तये देवर्षि पितृ तर्पणमहं करिष्ये।

हाथ में सकुश अक्षत लेकर आवाहन करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः, ये तर्पणेऽत्र विहिताः सावधाना भवन्तुते। अथवा

ब्रह्मादयः सुराःसर्वे ऋषयः शौनकादयः
आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदर वर्तिनः॥

सव्य हो साक्षतकुशहस्त पूर्वाभिमुख एक एक अञ्जलि जल देवे।

मन्त्र

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्, ॐ विष्णुस्तृप्यताम्, ॐ रुद्रास्तृप्यन्ताम्, ॐ प्रजापतिस्तृप्यतां, ॐ देवास्तृप्यन्ताम्, ॐ छन्दासि तृप्यन्ताम्, ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्, ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्, ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्, ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्, ॐ इतरा चार्यास्तृप्यताम्,ॐसम्वत्सरः सावयवस्तृप्यताम्, ॐदेव्यस्तृप्यताम् ॐअपसरसस्तृप्यताम्, ॐदेवानुगास्तृ०, ॐनागास्तृ०, ॐसागरा-

स्तृ०, ॐ पर्वतास्तृ०, ॐ सरितस्तृ०, ॐ मनुष्यास्तृ०, ॐ यक्षास्तृ०, ॐ रक्षांसितृ०, ॐ पिशाचास्तृ०, ॐ सुपर्णास्तृ०, ॐ भूतानितृ०,ॐ पशवस्तृ०, ॐ वनस्पतयस्तृ०, ॐ ओंषधयस्तृ०, ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम् ।

यज्ञोपवीत कण्ठ में माला के तुल्य उत्तर मुख कुश दक्षिण अङ्गुष्ठ में दबाकर दो दो अञ्जलि देवे ।

ॐसनकस्तृप्यताम् २। ॐसनन्दनस्तृ० २। ॐसनातनस्तृ० २। ॐ सनत्कुमारस्तृ० २। ॐ कपिलस्तृ० २। ॐ आसुरिस्तृ० २। ॐ वोढुस्तृ० २। ॐ पञ्चशिखस्तृ० २।

दक्षिणाभिमुख होकर हाथ में कुशा तिल लेकर तीन तीन अञ्जलि। अपसव्य होकर देवे ।

आवाहनम्

ॐ कव्यवाड् नलादयो दिव्यपितर आगच्छन्तु गृह्णन्त्वे-तज्जलाञ्जलीन् ।

ॐ कव्यवाड् नलस्तृप्यताम् मिदं जलं तस्मै स्वधा ३। ॐ सोमस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा ३। ॐ यमस्तृप्यता मिदं जलं तस्मै स्वधा ३। ॐ अर्यमा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा ३। ॐ अग्निष्वाताः पितरस्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा ३। ॐ सोमपाःपितरस्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा ३। ॐ वर्हिषदः पितरस्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा ३।

ॐ यममूर्तय आगच्छन्तु गृह्णन्त्वेतज्जलाञ्जलीन् ।

ॐ यमाय नमः ३। ॐ धर्मराजाय नमः ३। ॐ मृत्यवे नमः ३। ॐ अन्तकाय नमः ३। ॐ वैवस्वताय नमः ३। ॐ कालाय नमः ३। ॐ सर्व भूतक्षयाय नमः ३। ॐ औदुम्बराय नमः ३। ॐ दध्नाय नमः ३। ॐ नीलाय नमः ३। ॐ परमेष्टिने नमः ३। ॐ वृकोदराय नमः ३। ॐ चित्राय नमः ३। ॐ चित्रगुप्ताय नमः ३।

मोटक तिल और कुश सहित तीन तीन अञ्जलि जल पितरों को देवे।

ॐ अमुक गोत्रः अस्मतपिता वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मैस्वधानमः। ३ ॐ अमुकगोत्रः अस्मत्पितामहः रुद्रस्वरूपः तृप्यतामिदं जलं तस्मैस्वधानमः। ३ ॐ अमुक गोत्रअस्मतप्रपितामहः आदित्य स्वरूप तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधानमः ३ ॐ अमुक गोत्रः अस्मतमाता अमुकी देवी गायत्री स्वरूपा इदं जलं तस्यैस्वधानमः। ३ ॐ अमुक गोत्रः अस्मतपितामही अमुकी देवी सावित्री स्वरूपा इदं जलं तस्यैस्वधानमः ३ ॐ अमुक गोत्रा अस्मत् प्रपितामही अमुकी देवी सरस्वती स्वरूपा इदं जलं तस्यैस्वधानमः।३ ॐ अमुक गोत्रः अस्मतमातामहः अग्नि स्वरूपः सपत्नीकस्तृप्यतामिदंजलं तस्मैस्वधानमः। ३ ॐ अमुक गोत्रोऽस्मत् प्रमातामहो वरुण स्वरूपः सपत्नीकस्तृप्यतामिदं जलं तस्मैस्वधानमः। ३ ॐ अमुक गोत्रोऽस्मत् वृद्धप्रमातामहः अमुकशर्मा आदित्य स्वरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मैस्वधानमः। ३

इसी क्रम से चाचा भाई बुआ, मौसी, बहिन, ससुर सास

गुरु आदि पितरों की भी वाक्य योजना कर तपण करे। यदि विस्तृत तर्पण करने की शक्ति न हो तो निम्नलिखित से मन्त्र तीन २ अञ्जलि देवे।

ॐ आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्तं देवर्षि पितृमानवाः।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमाता महादयः॥
अतीत कुलकोटीनां सप्तद्वीप निवासिनाम्।
आब्रह्म भुवनाल्लोकादिमस्तु तिलोदकम्॥

[इति त्रिभिर्दद्यात्]

ये बान्धवाऽबान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा॥
ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्॥

भीष्म तर्पणम्

अपसव्य होकर नीचे लिखे मन्त्र से भीष्म पितामह को अञ्जलि देवे।

वैयाघ्रपदगोत्राय साङ्कृत्यप्रवराय च।
अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे॥

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ कर सूर्य नारायण को तीन बार अर्घ्य देवे।

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

अथ देवेभ्योऽर्घ दानम्

निम्नलिखित मन्त्रों से पुष्प गन्ध तुलसी आदि लेकर अर्घ्य देवे।

ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरचो व्वेनऽआवः। सबुन्ध्याऽउपमाऽअस्य व्विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः॥ ॐ ब्रह्मणेनमः॥१॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्यपाꣳसुरे स्वाहा॥ ॐ विष्णवे नमः॥२॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्न्यवेऽउतोतऽइषवेनमः बाहुब्भ्यामुतते नमः। ॐ रुद्रायनमः॥३॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्॥ ॐ सवित्रे नमः॥४॥ ॐ मित्रस्य चर्षणी धृतोऽवो देवस्य सानसि द्युम्नश्चित्र श्रवस्तमम्॥ ॐ मित्रायनमः॥५॥ ॐ इमम्मे वरुणश्रुधीहवमध्या च मृडय। त्वामस्युराचके॥ ॐ वरुणाय नमः॥६॥

अथ दिशां देवतानांच नमस्काराः

ॐ प्राच्यै-इन्द्रायनमः। ॐ आग्नेय्यै-अग्नयेनमः। ॐ दक्षिणायै-यमायनमः। ॐ नैर्ऋत्यै निर्ऋतयेनमः। ॐ पश्चिमायै-वरुणायनमः। ॐ वायव्यै वायवेनमः। ॐ उदीच्यै-सोमायनमः। ॐ ऐशान्यै-ईशानायनमः। ॐ ऊर्ध्वायै-ब्रह्मणेनमः। ॐ अधस्तात् विष्णवेनमः। ॐ अवाच्यै-अनन्तायनमः। जलमध्ये ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अग्नयेनमः। ॐ पृथिव्यैनमः। ॐ ओषधिभ्योनमः। ॐ वाचेनमः। ॐ वाचस्पतयेनमः। ॐ विष्णवेनमः। ॐ महद्-

भ्योनमः । ॐ अद्भ्योनमः । ॐ अपांपतयेनमः! ॐ वरुणायनमः ॥

अनेन यथाशक्ति कृत देवर्षिमनुष्ययम पितृतर्पणाख्येन कर्मणा श्रीभगवान् सगसमस्त पितृरूपी जनार्दन वासुदेवः प्रीयतां न मम।

इति तर्पण प्रयोगः

अध्याय ७

"देवपूजा"

देवपूजा हिन्दूमात्र को नित्य प्रेम श्रद्धा पूर्वक करनी उचित है। सत्ययुग में ब्रह्मा, त्रेता में सूर्य, द्वापर में विष्णु कलियुग में महेश श्रीचण्डी श्रीगणेशजी श्रीहनुमानजी की उपासना विशेष कही गई है। परन्तु सर्वत्र शास्त्रों में पञ्चदेव की पूजा और अन्य देवताओं की पूजा भी लिखी है। आदित्य, गणेश, देवी, विष्णु, शङ्कर की प्रतिष्ठित मूर्त्ति की पूजा करे। अथवा शालिग्राम और बाणलिङ्ग (नर्मदेश्वर) जिसमें आवाहन प्रतिष्ठा संस्कार की आवश्यकता नहीं है। अथवा सुवर्ण, चाँदी, ताँबा, रत्न, पञ्चधातु की मूर्ति जो एक बालिश्त से अधिक बड़ी न हो अंगुष्ठ से छोटी न हो। बनवाकर घर में चल प्रतिष्ठा विधि से स्थापित करे। घर में अचल प्रतिष्ठा न करे। नित्य प्रातःकल स्नानादि से निवृत्त हो शुद्ध आसन पर बैठकर पूजा सामग्री

को इकट्ठा कर ललाट में भस्म या चन्दन लगाकर श्रीशालिग्राम नर्मदेश्वर की पूजा निम्नलिखित विधि से करें—

आचमन प्राणायाम अङ्ग न्यास करन्यास कर आवाहन करे।

आवाहन

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् सभूमिꣳ सर्व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ।

आगच्छ भगवनदेव स्थाने चात्र स्थिरो भव ।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधो भव ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री अमुक पञ्चायतन देवताभ्योनमः, आवाहन पूर्वकं ध्यानं समर्पयामि ।

आसनम्

पुरुष एवेदꣳ सर्वयद्भूतं यच्च भाव्यम ।
उतामृत त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥
रम्यं सुशोभनंदिव्यं सर्वसौख्यकर शुभम् ।
आसनं च मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री अमुक पञ्चायतन देवताभ्योनमः आसनं समर्पयामि ॥

पाद्यम्

एतावानस्य महिमाऽतोज्यायांश्च पूरुषः पादोऽस्य ।
विश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतं दिवि ॥
उष्णोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध्य संयुतम् ।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं तेप्रतिगृह्यताम ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीअमुक पञ्चायतन देवताभ्योनमः पाद्यं समर्पयामि ॥

अर्घ्यम्

त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः ।
ततो विश्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥
अर्घ्यंगृहाणदेवेश गन्ध पुष्पाक्षतैस्सह ।
करुणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥

ॐ भू० अ० अर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमनम्

ततो विराडजायत विराजोऽधि पुरुषः ।
सजातोअत्यरिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः ॥
सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम् ।
आचम्यतां मयादत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥

ॐ भू० अ० आचमनीयम् समपंयामि ।

स्नानम्

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम् पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्याग्राम्यान्श्चये ।

गङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः ।
स्नापितोऽसि मयादेव तथा शान्तिं कुरुष्व मे ॥

ॐ भू० अ० स्नानं समर्पयामि । स्नानान्ते आचमनीयम् जलं समर्पयामि ।

दुग्ध स्नानम्

ॐ पयः पृथिव्व्याम्पयऽओषधीषु पयोदिव्व्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।

कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयःस्नानार्थमर्पितम् ॥

दुग्धस्नानं समर्पयामि दुग्धस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि तदन्ते आचमनं च समर्पयामि ।

दधि स्नानम्

दधि क्राम्णोऽकारिषञ्जिष्णोरश्वस्यव्वाजिनः ।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रणाऽआयूꣳषि पितारिषत् ॥
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मयादेव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भू० अ० दधिस्नानं समर्पयामि दधिस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं तदन्ते चाचमनीयं समर्पयामि ॥

घृतस्नानम्

ॐ घृतङ्घृतपावान : पिवतव्वसापावानः पिवतान्त रिक्षस्य हविरसिस्वाहा दिशः प्रदिशऽआदिशोव्विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥

नवनीत समुत्पन्नं सर्व सन्तोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भू० अ० घृतस्नानं समर्पयामि घृतस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानम् तदन्ते आचमनं समर्पयामि ।

मधुस्नानम्

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीन्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्तमुतोषसो मधु मत्पार्थिवारजः ॥ मधु द्यौर-स्तुनः पिता मधुमान्नो वनस्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः ४ माध्वी र्गावो भवन्तुः ॐ मधु मधु मधु ॥

तरु पुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भू० अ० मधुस्नानं समर्पयामि मधु स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं तदन्ते आचमनं च समर्पयामि ॥

शर्करास्नानम्

ॐ अपा ꣳ समुद्द्वयस ꣳ सूर्य्ये सन्त ꣳ समाहितम् अपा ꣳ रसस्ययोरसस्तंव्वोगृह्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतो सीन्द्रा-यत्वाजुष्टङ् गृह्णाम्म्येषते योनिरिन्द्रायत्त्वा जुष्टतमम् ॥

इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टि कारिका ।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भू० अ० शर्करास्नानं समर्पयामि शर्करास्नानान्ते शुद्धो-दक स्नानं तदन्ते आचमनीयञ्च समर्पयामि ।

पञ्चामृत स्नानम्

ॐ पञ्चनद्यऽसरस्वतीमपियन्ति सस्रोतस ऽ सरस्वतीतु पञ्चधासो देशे भवत्सरित् ॥

पयोदधि घृतंचैव मधु च शर्करायुतम् ।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भू० अ० पं० स्नानं तदन्तेचाचमनीयं समर्पयामि ततः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

गन्धोदक स्नानम्

ॐ गन्धर्व्वस्त्वाव्विश्वावसुः परिदधातुव्विश्वस्यायरिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडित ॥ ॐ भू० अ० गन्धोदक स्नानं समर्पयामि तदन्ते शुद्धोदक स्नानं तदन्ते आचमनं च समर्पयामि ॥

उद्वर्तन स्नानम्

ॐ अ हं शुनातेऽअह शु ॥ पृच्यताम्परुषापरुःगन्धस्ते सोममवतु मदायरसोऽच्युतः ।

नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् ।
उद्वर्तनं मयादत्तं स्नानार्थं प्रतिह्यताम् ॥

ॐ भू० अ० उद्वर्तन स्नानं समर्पयामि तदन्ते शुद्धोदक स्नानं तदन्ते आचमनं च समर्पयामि ।

शुद्धोदक स्नानम्

ॐ शुद्ध वालः सर्व शुद्ध वालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्वेतः श्वेताक्षोरुणस्तेरुद्द्रायपशुपतये कर्ण्णायामाऽवलिप्तारौद्द्रानभोरूपाःपार्ज्जन्याः ॥

ॐ भू० अ० शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

वस्त्रोपवस्त्रम्

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व हुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥

सर्वभूषाधिके सौम्यं लोकलज्जा निवारिणे ।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भू० अ० वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीतम्

तस्मादश्वा अजायन्तयेकेचोभयादतः गावोहजज्ञिरे तस्मा-त्तस्माज्जाताऽअजावयः ॥

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ भू० अ० यज्ञोपवीतं समर्पयामि । आचमनं समर्पयामि ।

गन्धम्

तं यज्ञं वर्हिपि प्रौक्षन्पुरुपं जातमग्रतः तेनदेवाऽअयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भू० अ० चन्दनं समर्पयामि ।

अक्षताः

ॐ अक्षन्नमीमदन्तवप्रियाऽअधूषत अस्तोषत स्वभानवो-विप्रानविष्ठयामतीपोजोन्न्विन्द्रते हरी ।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ता सुशोभिताः
मयानिवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ भू० अ० अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्पाणि

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन् । मुखंकिमस्यासीकिं० वाहू किमूरूपादाउच्येते ।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ भू० अ० पुष्पाणि समर्पयामि ।

पुष्पमालाम्

ओषधी प्रतिमोदध्वम्पुष्पवती प्रसूवरी: ।
अश्वाऽइव सजित्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णव: ॥
ॐ भू० अ० पुष्पमालां समर्पयामि ।

तुलसीदलम्

ॐ विष्णोऽकर्म्माणि पश्यत यतोव्व्रतानि पस्पशे इन्द्रस्य युज्य: सखा ।

तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम् ।
भव मोक्षप्रदां तुभ्यंमर्पयामि हरिप्रियाम् ॥
ॐ भू० अ० तुलसी समर्पयामि ।

दूर्वा

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुष: परुषस्पति एवानो दूर्वेप्प्रतनु सहस्रेण शतेन च ।

विष्णवादि सर्वदेवानां दूर्वे त्वं प्रीतिदासदा ।
क्षीरसागरसंभूते वंशवृद्धिकरीभव ॥
ॐ भू० अ० दूर्वां समर्पयामि ।

बिल्वपत्रम्

ॐ शिवोभवप्प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिर: । माद्यावा पृथिवीऽअभि शोचीर्म्मान्तरिक्षम्माव्वनस्पतीन् ।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुधम् ।
त्रिजन्मपापसंहारमेकबिल्वं शिवार्पणम् ॥

ॐ भू० अ० बिल्वपत्रं समर्पयामि ।

सौभाग्यद्रव्यम्

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येतिबाहुञ्ज्यायहितिम्परिबाधमान
हस्तघ्नोव्विश्वाव्वयुनानिव्विद्वान्पुमा ᳪ सम्परिपातुव्विश्वतः ।

हरिद्रां कुङ्कुमंचैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम् ।
सौभाग्यद्रव्य संयुक्तं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ भू० अ० सौभाग्यद्रव्यं समर्पयामि ।

धूपम्

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽअजायत ॥
वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भू० अ० धूपमाघ्रापयामि ।

दीपम्

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्योअजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥
आज्यंचवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितंमया ।
दीपं गृहाणदेवेश त्रैलोक्यतिमिरापह ॥

ॐ भू० अ० दीपं दर्शयामि ।

हस्तौ प्रक्षाल्य नैवेद्यं निवेदयामि ।

नैवेद्यम्

नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो: द्यौः समवर्तत पद्भ्यां भूमिर्दिश: श्रोत्रात्तथा लोकान्नकल्पयन् ।

शर्करा घृत संयुक्तं मधुरं स्वादुचोत्तमम् ।
उपाहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भू० अ० नैवेद्यं निवेदयामि ।

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ।

नैवेद्यान्ते आचमनीयम्

एलोशीरलवङ्गादि कर्पूर परिवासितम् ।
वासनार्थंकृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ॥

उत्तरापोशनम, हस्तप्रक्षालनम, मुखप्रक्षालनम, आचमनीयं च समर्पयामि ।

करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ॥ मुखवासार्थे ताम्बूलं ॥

ॐ यत्पुरुषेण हविषादेवा यज्ञमतन्वत वसन्तो ऽस्यासीं-दाज्यं ग्रीष्मइध्म: शरद्धवि: ।

पुङ्गीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलाचूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भू० अ० ताम्बूलं समर्पयामि ।

फलम्

ॐ या: फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुस्पा पाश्चपुष्पिणी वृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हस: ।

इदं फलं मयादेव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ॐ भू० अ० फलं समर्पयामि।

दक्षिणा

ॐ हिरण्यगर्ब्भःऽसमवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातऽपतिरेकऽ-
आसीत् सदाधार पृथिवीन्द्यामुत माङ्कस्म्मै देवाय हविषाविधेम।

हिरण्य गर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्त पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भू० अ० दक्षिणां समर्पयामि।

आर्तिक्यम्

ॐ इद ᳫ हविःऽप्रजननम्मेऽअस्तदशवीरस्सर्व्वगण ᳫ स्वस्तये।
आत्त्वसस्सनिप्प्रजासनि पशुसनि लोकसन्न्यभवसनि अग्निऽ-
प्रजाम्बहुलाम्मे करात्वन्नम्पयो रेतोऽअस्म्मासुधत्त।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्।
आर्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ॐ भू० अ० आर्तिक्यं दर्शयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्
तेहनाकम्महिमान सचन्तयत्त्रपूर्व्वे साद्ध्या सन्तिदेवा ॐ
राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमोवयं वैश्रवणाय कुर्महे
समे कामान्कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणोदधातु कुबेराय
वैश्रवणाय महाराजायनमः

नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मयादत्तगृहाण परमेश्वर ॥
ॐ भू० अ० पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

क्षमापनम्

आवाहनं न जानामि न जनामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥

प्रदक्षिणा

ॐ सप्तास्यासन्न्परिधयस्त्रिसप्तसमिध: कृता देवायज्ञन्त-न्वानाऽअबन्धवन्न्पुरुषम्पशुम् ।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणया पदेपदे ॥
ॐ भू० अ० प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

अनेनयथा शक्तिमत्कृतेन पूजनेन सर्वान्तर्यामी भगवान्प्री-यतां न मम ।

शुद्ध मिट्टी छानकर मूर्ती बनाकर पार्थिव पूजन करे। कलियुग में पार्थिव पूजन का अधिक महत्व कहा गया है। इससे समस्त ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है । गृहस्थ को एक ही मूर्ति की पूजा नहीं करनी चाहिए। अनेक मूर्ति की पूजा से समस्त कामनायें सिद्ध होती हैं। यथा गणेश, शिव, विष्णु देवी (शालिग्राम सूर्यादि) के पूजन से मनोरथ पूरा हो जाता है । प्रथम गणेशजी की पूजा होती है । फिर अपने इष्टदेव की। पश्चात् सर्व देवताओं की। यज्ञोपवीत रहित, शूद्र, स्त्री, पतित

पुरुष को शिव या विष्णुजी की मूर्ति का स्पर्श नहीं करना चाहिये। मूर्ति की प्रतिष्ठा मुहूर्त मास दिन, नक्षत्र शुभाशुभ देखकर करनी चाहिए। पहने हुए वस्त्र में पुष्पादि न बाँधे। पुष्प धोया नहीं जाता। स्नान कर फूल न तोड़े। स्वयं गिरे हुए पुष्पों को न चढ़ावे। पूजा अनेकों प्रकार की होतीं है। आस्तिकता भक्ति से नमस्कार व किञ्चित् वस्तु अर्पण करना पूजा है। पूजा ५, १०, १६ प्रकार से होती है।

गन्ध पुष्पे धूप दीपौ नैवेद्यमिति पञ्चकम्।

गन्ध, पुष्प धूप दीप और नैवेद्य के द्वारा किया हुआ पूजन पञ्चोपचार कहलाता है।

१—अर्घ्य, २—पाद्य, ३—आचमन, ४—स्नान, ५—वस्त्र निवेदन, ६—गन्ध, ७—पुष्प, ८—धूप, ९—दीप, १०—नैवेद्य यह दशोपचार है।

षोडशोपचार

आवाहनासनेपाद्यं मर्घ्यमाचमनीयकम्।
स्नानं वस्त्रोपवीते च गन्धमाल्यानुक्रमात्॥
धूपं दीपं च नैवेद्यं ताम्बूलं च दक्षिणा।
पुष्पाञ्जलिरिति प्रोक्ता उपचारास्तु षोडशः॥

पूजन के निमित्त देवता के पास देवरूप पवित्र शान्तभाव से जा कर भस्म रुद्राक्ष से अलंकृत शरीर में कुश सहित जल विन्दु से शुद्ध होकर देव पूजन करे। पश्चात् गुरु मन्त्र का न्यास ध्यान करके जप करे। देवताओं का पूजन अपने २ मन्त्रों से

वैदिक या पौराणिक या तान्त्रिक मन्त्रों से अथवा ॐ अमुकदेवाय स्नानीपयम् जलं धूपं दीपम् आदि समर्पयामिनमः। इतना ही पढ़कर पूजा करे। त्रिकाल, द्विकाल या एक काल मान्त्रिक भक्ति श्रद्धा से पूजा करने वाला मनुष्य कलियुग में दुर्गति को नहीं प्राप्त होता है। स्वयं पूजन करना उत्तम, कुल के पुत्रादि द्वारा मध्यम, किराये के आदमी रखकर पूजा करना यह अधम है। और जो अभिषेक पुरुषसूक्त से या रुद्राध्याय से शिवार्चन पद्धति के अनुसार नित्य करते हैं उसका अनन्त फल मोक्ष है। मन्त्रों का बीज, ऋषि, छन्द, देवता जानकर पढ़कर विनियोग तथा न्यास करे। पश्चात् जप स्तुति करे। रुद्राध्याय के (पञ्चम) अध्याय के ६६ मन्त्रों से अभिषेक को रुद्राभिषेक और ११ आवृत्ति करने से (लघुरुद्र) एकादश और १२१ आवृत्ति अभिषेक हवन को महारुद्र याग कहते हैं। सब यज्ञ सर्व पापों को क्षय करके शान्ति प्रदान करते हैं। अभिषेक दुग्ध या गङ्गादि जल से अखण्ड धारा मूर्ति पर यावत् समाप्ति पूजा चलता रहता है। इसी प्रकार श्रीगणेशजी देवी सूर्य विष्णु आदि के एकावर्तन एकादशनी और महाभिषेक अथर्व शीर्षकों से होते हैं। पूजा के द्रव्य शुद्ध स्वच्छ नीतिपूर्वक कमाया धन होवे। पूजापात्र, जलपात्र देश (पूजन की जगह) वस्त्र आसन गन्ध (चन्दन कस्तूरी केसर) अक्षत (चावल टूटा न हो) पुष्प (बासी कुम्हला कली कीड़ा का खाया न हो) बिल्वपत्र (त्रिपत्ती चतुष्पत्ती पञ्चपत्ती) उत्तमोत्तम हैं। (छिद्र

रेखायुक्त) न हो। तुलसी (हरी त्रिपत्ती युक्त) जिसको रुँगा कहते हैं। दूर्वा (हरी त्रिपत्ती) हो कुशा (नवीन या भाद्र अमावस्या के दिन) का उखाड़ा हुआ हो। धूप अगर तगर कस्तूरी चन्दन, देवदारू, कपूर, घी, शक्कर, दीप, कपास की रुई की। घी के अभाव में तेल की वत्ती भी हो सकती है। नैवेद्य (तुलसी युक्त पकवान वा फल दुग्ध दही आदि अनेक प्रकार के खाद्य भक्ष्यादि पदार्थ) ताम्बूल मसाला युक्त पवित्र हो दक्षिणा शक्ति के अनुसार पुष्पाञ्जलि नमस्कार यज्ञेनयज्ञ इत्यादि मन्त्र से प्रदक्षिणा इस मन्त्र से

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि विनश्यन्ति प्रदक्षिणाया पदेपदे ॥ पुनः
नाना सुगन्धिपुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मयादत्तः गृहाण परमेश्वर ॥

रक्ष रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्य रक्षक।
भक्तानामभयंकर्ता त्राताभव भवार्णवात्।
वरदस्त्वं वरं देहिवाञ्छितं मनसेप्सितम् ॥

पढ़कर पुष्पाञ्जलि दे देवे।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्य परमेश्वर ॥
यदक्षरं पदंभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद्भवेत।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥

साष्टाङ्ग लेट कर छाती, शिर, आँख, मन, वचन, पैर, हाथ, जंघा फैलाकर प्रणाम करे निर्माल्य फल, पुष्प, पत्र अन्नादि भोग प्रसाद सब देवता का ग्रहण किया जाता है। शालिग्राम वाण नर्मदेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग स्वयं प्रकट हुए सिद्ध स्थापित लिङ्ग व पार्थिव का पाया जाता है। अन्य (चंडेश्वर) लिङ्ग का निर्माल्य पाना निषिद्ध है। अक्षत मदार पुष्प से भगवान् श्रीविष्णु की पूजा न करे। तुलसी से गणेश, दूर्वा से देवी की विल्वपत्र से सूर्यनारायण की पूजा न करे। शङ्कर जी को विल्वपत्र श्वेत पुष्प श्रीविष्णु को तुलसी गणेश जी को दूर्वा रक्त पुष्प चढ़ाना चाहिए। देवी को व सूर्यनारायण को ओडहुल करवीर और दुपहरी आदि रक्त पुष्प अति प्रिय है।

देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम् श्रीकृष्ण यजुर्वेदीयोपनिषत्

हवन

प्रतिदिन यथाशक्ति अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिए, इस यज्ञ से देवता, पितरों की प्रसन्नता, वंशवृद्धि, धन्य धान्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति दरिद्रता का नाश, अन्तःकरण की शुद्धि, स्वर्ग मोक्ष का लाभ होता है। यदि प्रतिदिन न हो सके तो अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति पर्व तिथिओं में अवश्य हवन करे यदि आतुर उपद्रव वश स्वयं न कर सके तो भाई, पुत्र, पुरोहित आदि द्वारा हवन करावे। हवन के लिए स्वच्छ गोमय से लिपी पृथ्वी पर

एकान्त में कुण्ड या वेदी बनावे। अथवा ताम्रपात्र का कुण्ड बनवाले। घृत, चावल, तिल, यव, शर्करा, तस्मै पूड़ी आदि की आहुति देवे। समिधा यज्ञीयवृक्ष (पलाश, पीपल, गूलर, बरगद, विल्व, शमी, चन्दन, देवदारु, खदिर) आदि में से किसी एक की समिधा एक विलश्त (१२ अंगुल) की कंटक काखा गाँठ रहित हों। घुनी, सड़ी, अथवा त्वचा से रहित न हो। अंगुष्ठ से अधिक मोटी न हो। ऐसी समिधा की आहु-तियाँ मधु,(घृत, दूध से होती हैं। और अपनी रुचि के अनुसार सकाम, निष्काम, शिवमन्त्र, नारायणमन्त्र, देवीमन्त्र, विष्णु-सहस्रनाम, पुरुषसूक्त, गायत्री, रुद्रसूक्त, त्र्यम्बकंसद्यो जातादि मन्त्रों से हवन करे। परन्तु असाधारण अति आवश्यक समय में भी इन मन्त्रों से हवन अवश्य करे। भूख, प्यास क्रोध से रहित होकर अग्नि को बाँस की फुकनी अथवा मुख से प्रज्वलित करके (पंखा वस्त्रादि से तेज न करे) आचमन कर भस्म लगाकर नीचे लिखे मन्त्र से पवित्री धारण करे—

ॐ पवित्रस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्यते पवित्रपतेः पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनस्तच्छकेयम्।

ॐ ह्रीं कमलासनाय आधार शक्त्यैनमः।

पढ़कर दृढ़ आसन पर बैठकर आहुति देवे। तदनन्तर निम्नलिखित पञ्चभू संस्कार करे।

१—कुशा से वेदी को झाड़कर उन कुशों को ईशान कोण में फेंक देवे।

२—गोबर से वेदी को लीपे श्रुवा के मूल से तीन लकीर खींचे।

३—अनामिका और अंगुष्ठा से कुछ मिट्टी निकाल देवे।

४—पुन: वेदी पर जल छिड़के।

वेदी पर समिधा रखकर निम्नलिखित मन्त्र से अग्नि स्थापन करे—

ॐ अग्निन्दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवां आसादयांदिह।

पुन: कुश कण्डिका करे। प्रणीता पात्र मोक्षणीपात्रादि रक्खे और कुश कण्डिका की सब विधि कर निम्नलिखित मन्त्रों से हवन करे और श्रुवा के अवशिष्ट घृत को प्रोक्षणीपात्र में छोड़े।

संक्षिप्त कुश कण्डिका विधि यह है अग्नि से दक्षिण तरफ़ आसन पर ब्रह्मा जी को अग्नि प्रदक्षिणा करा के बैठावे और अग्नि से उत्तर की तरफ़ कुश पर प्रणीता-पात्र रक्खें और उसको जल से भर कर कुशों से ढाँक दे। फिर कुशा अग्निकोण से ईशानकोण ब्रह्माजी के आसन से अग्नि पर्यन्त और नैऋत्य कोण से वायुकोण तक रक्खे। पवित्र छेदन के लिए ३ कुशा और पवित्री करणार्थ साग्र अनन्त गर्भ कुश पत्र द्वय और प्रोक्षणी पात्र आज्यस्थाली सम्मार्जन कुशा ५ उपयमन कुशा ७ श्रुवा, घी, पूर्णपात्र रखना चाहिये। और इसके बाद तीन कुशों

से पवित्री को काट कर हाथ में पवित्री लिए हुए प्रणींता का जल तीन बार प्रोक्षणी पात्र में रख कर प्रोक्षणी पात्र को बाँये हाथ में लेकर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुष्ठा से पवित्री से तीन बार ऊपर जल उलचे। प्रोक्षणी पात्र में प्रणीता का जल गिरावे। ज़मीन में गिरने दे। प्रोक्षणी का जल सब वस्तुओं पर छिड़के। अग्नि और प्रणीता के बीच प्रोक्षणी पात्र को रख दे। घृत पात्र में घृत रख कर अग्नि पर रख दे और जलता हुआ कुश घृत पात्र पर घुमाकर अग्नि में छोड़ दे। पुनः श्रुवा को तपा कर क्रम से कुश के मूल मध्य और अग्र से श्रुवा के मूल, मध्य, अग्र को मार्जित कर पुनः श्रुवा को तपाकर दाहिने तरफ़ रख दे। घी को अग्नि से उतार कर उसमें से खराब द्रव्यों को निकाल दे और उपयमन कुशा को बांये हाथ में रखकर अग्नि पर्युक्षण कर खड़ा होकर प्रजापति का ध्यान करते हुए मौन हो घी में डुबोकर तीन लकड़ियों को छोड़े। पुनः बैठ कर सपवित्र प्रोक्षणी जल से अग्नि को मण्डल कर पवित्री को प्रणींता पात्र में रख कर दक्षिण जानु को टेक कर कुशा द्वारा ब्रह्मा जी से संबन्ध कर जलती हुई अग्नि में घृताहुति दे। १२ आहुतियों में प्रत्येक आहुति के अनन्तर श्रुवा का अवशिष्ट घृत प्रोक्षणी में डाले। और अग्नि का पूजन तथा संकल्प कर हवन करे।

१—ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम।

२—ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय न मम।

३—ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम।

४—ॐ सोमायस्वाहा इदं सोमाय न मम।

५—ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम।

६—ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम।

७—ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम।

एता महा व्याहृतयः। यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारकं भवेत् तद्वद्दैवोपघातानां शान्तिर्भवति वारिका ॥ शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु यत्पापं तत्प्रतिहत मस्तु। द्विपदे चतुस्पदे सुशान्तिर्भवतु इति प्रायश्चित होमः ॥

अथ पञ्चवारुणी होमः

८—ॐ त्वन्नोऽग्ने वरुणस्य व्विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः यजिष्ठोव्वह्नितमः शोशु चानो व्विश्वा द्वेवा ꣳसि प्रमुग्ध्यस्मत्स्वाहा।

इदमग्नि वरुणाभ्यां न मम।

९—ॐ सत्वन्नोऽ अग्ने वमो भवोती ने दिष्ठोऽ अस्याऽ उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्वनो व्वरुण ꣳ रराणो व्वीहिमृडीकं ꣳ सुहवोनऽएधि स्वाहा।

इद मग्नि वरुणाभ्यां न मम।

१०—ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य न भिशतिपाश्चसत्वमित्व मयाऽ असि अयानो यज्ञं वहास्वानो धेहि भेषज ꣳ स्वाहा।

इद मग्नये न मम।

ॐ एते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा व्वितता महान्तः। तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्व्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्योदेवभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमम ॥

ॐ उदुत्तमंव्वरुण पाश मस्मदवाधमं व्विमध्यमꣳ श्रथाय अथाव्वयमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायादित्यायादितये नमम ॥ अत्रोदक स्पर्शः

इतिपञ्चवारुणी होमः

इनमें अन्तिम पाँच आहुतियाँ सर्व प्रायश्चित्त संज्ञक हैं इनके हवन से नित्यानित्य ज्ञाता ज्ञात पाप नष्ट हो जाते हैं।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतयेनमम।

ॐ अग्नये स्विष्ट कृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्ट कृते नमम॥

इसके बाद कुण्ड के चारों ओर रक्खे हुए कुशों को क्रमशः उठाकर घी लगाकर आगे के मन्त्रों से वह्नि होम करे—

ॐ देवागातु चिदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पतइ मं देव यज्ञꣳस्वाहा वातेधाः स्वाहा॥

तदनन्तर ब्रह्मा के लिए पूर्ण पात्र का दान करे तथा ब्रह्म ग्रन्थि को खोले। तदनन्तर १० दिगपालों को तथा क्षेत्रपालों को पूजन पूर्वक बलि देवे। इसके अनन्तर संकल्प पूर्वक पूजन कर नीचे लिखे मन्त्र से पूर्णाहुति दे—

१६ ॐ पूर्णा देर्वि परापत सुपुर्णा पुनरापत वस्तेव विक्रीणा वह। इष मूर्जꣳ सतक्रतोः स्वाहा॥ इदमिंद्रायनमम॥

संश्रव प्राशन (प्रोक्षणीपात्र स्थिवत जल बिन्दुओं को चाटने) के बाद।

ॐ त्र्यायुषंयमदग्नेः ललाटे कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणांसे । तन्नोऽस्तुभ्यायुर्षमिति हृदि ॥

इन चार मन्त्रों से क्रमशः ललाट, ग्रीवा, दक्षिण बाहु मूल और हृदय में भस्म लगावे। जो ताम्रकुण्ड में हवन करते हैं, उनको पञ्चभू शुद्धि की आवश्यकता नहीं होती। यदि विधि पूर्वक मन्त्र से अग्नि होम नहीं कर सकते। तो भी अग्नि में नियम से आहुति अग्नि को ईश्वर का मुख मानकर देना चाहिए। यही देव यज्ञ है।

स्वाध्याय

स्वाध्याय को ब्रह्म यज्ञ कहते हैं। अपने वेद या शाखा को अथवा अन्य वेदों को भी क्रम से अध्ययन करना चाहिए। वेद में जटा, माला शिखा, रेखा, ध्वजा, दण्ढ, रथ, घन को अच्छी प्रकार जाननी चाहिए।

हस्त स्वर वर्ण मात्रा युक्त अर्थ ज्ञानपूर्वक वेदाध्ययन करने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है।

स्वाध्यायात्माप्रमदः । स्वाध्याय प्रवचने एव नाकः इति मौद्गल्यः तद्धितपस्तद्धितपः ॥

॥ श्रीकृष्णयजुर्वेदीयां पनिषत् ॥

याज्ञवल्क्यजी की शिक्षा है, कि त्रिफला लवणयुक्त सदा

भक्षण करने से मेधा स्वर, वर्ण पैदा होते हैं। यदि वेदाध्ययन में अशक्त है या अनधिकारी है तो उसे पुराण, शास्त्र, रामायण इतिहास आदि का पाठ करना चाहिए। नित्य कर्म में अनध्याय नहीं होता है जो निम्नलिखित अनध्याय हैं, वे तो शिक्षार्थियों के लिए हैं।

१—अमावस्या। २—चतुर्दशी, अष्टमी। ४—राहु सूतक पितृ पक्ष और श्राद्ध भोजन, स्मशानगमन, दुर्दिन, घर में श्रेष्ठ पुरुषागमन पर, मेष मकर सँक्रान्ति, अक्षयनवमी, अक्षय तृतीया, होली, दिवाली, दशहरा, शिवरात्रि, श्रावणी, नागपञ्चमी, यमद्वितीया, ये अनध्याय हैं। कुश पवित्र धारण कर कुशासन या योग्य आसन पर वैठकर पूर्व उत्तराभिमुख हो कर आचमन प्राणायाम संकल्प हाथ जोड़ करके प्रातः होम के पीछे स्वाध्याय करना चाहिए। मन्त्रों का जप भी स्वाध्याय है जो कालान्तर में भी किया जा सकता है।

बलिवैश्वदेव विधि

वैश्वदेव चूल्हे में लोह पात्रखप्पर या पृथ्वी पर न करे। वेदी या कुण्ड वना कर या ताम्वे का हवन पात्र बना कर उसमें अग्नि स्थापन कर हवन करे। हवन के सामग्री में फल, दधि, घृत, मूल, शाक, घृत सहित हवन करे अथवा दूध भात (धान का) बेर या आमला के बराबर आहुति दक्षिण हस्त से अंगुलियों पर रख कर अंगूठे से अग्नि कुण्ड में छोड़े। बाँया हाथ से

हृदयाबलम्बन (हृदय छूना) किये रहे। आहुति में नमक तेल मिर्चा न हो। कोदों, चना, उरद, मंसूर, कुल्थी बासी अन्न दूषित अन्न जला हुआ न हो आसन पर बैठ कर आचमन प्राणायाम कुश पवित्री धारण कर संकल्प पढ़ कर अग्नि का आवाहन पुष्प से कर ॐ पावक नाम्ने वैश्वानराय नमः। अग्नेशाण्डिल्य गोत्र मेषध्वज प्राङ् मुख मम सम्मुखो भव (ऊर्ध्वमुखो) भव ॐ एषोहदेवः प्रदिशोनु सर्वाः पूर्वोहगातः स ऊ गर्भे अन्तः सएव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः।

ॐ ब्रह्मणेस्वाहा इदम्ब्रह्मणे न मम।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदम्प्रजाततये न मम।

ॐ गृह्याभ्यः स्वाहा इदम् गृह्याभ्यः न मम।

ॐ कश्यपाय स्वाहा इदम् कश्यपाय न मम।

ॐ अनुमतये स्वाहा इदम् अनुमतये न मम।

ॐ भूः स्वाहा इदम् अग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा इदम् वायवे न मम।

ॐ स्वः स्वाहा इदम् सूर्याय नमम।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदम् प्रजापतये न मम।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

आचमनी से जल देकर आचमन करके उठे।

नोट—यह वैश्वदेव विधि अत्यन्त संक्षेप में है यदि यह भी न हो सके तो भोजन के पहले अग्निकुण्ड में घृत भात मिलाकर छोड़ देना चाहिए।

यस्याग्निहोत्रमदर्शमपौर्णमासमचातुर्मास्य अनाग्रयणमतिथिवर्जितं च । अहुतमवैश्वदेवमविधिनाहुतमश्रद्धयाहुतमासप्तमांस्तस्य लोकान् हितस्ति (अथर्ववेदीयोपनिषद) ।

अतिथि

वैश्वदेव से निवृत्त हो कर अतिथि की प्रतीक्षा करे । यदि कोई अतिथि प्रिय, अप्रिय, मूर्ख, विद्वान, विद्यार्थी, संन्यासी ब्रह्मचारी दरिद्री चाण्डाल चोर शत्रु अन्नार्थी, क्षुधित (क्षुधा से दुखित) प्राप्त हो जाय तो प्रथम अतिथि पूजा, सत्कार, आसन जल अन्न, यथा शक्ति, यथा योग्य, श्रद्धा से देकर मधुर वचन पूर्वक नमस्कार करे । अतिथि वैश्वानर अग्नि है इसका अपमान नहीं करना चाहिए ।

(अतिथि देवोभवकृष्ण यजुर्वेदीयोपनिषद्)

अतिथिर्यस्य भग्नाशो गृहात्प्राति निवर्तते ।
सस्तस्य पुण्यमादाय पापं दत्वा च गच्छति ॥१॥
अतिथिचावमन्यन्ते काले प्राप्ते गृहाश्रमें
तस्मात्ते दुष्कृतं प्राप्य गच्छन्ति निरयेऽशुचौ ॥२॥

(शिव पुराणे)

वैश्वदेव विहीना ये आतिथ्येन वहिष्कृता:
सर्वे ते नरकं यान्ति काक योनि-व्रजन्ति च ॥३॥

(पाराशरस्मृति)

चौरो वा यदि चाण्डाल: शत्रुर्वापितृघातक:
वैश्वदेवे तु संप्राप्ते सोऽतिथि स्वर्गसंक्रम: ॥४॥

अभ्रयोतिथिमिच्छन्ति सोऽतिथिस्वर्गमिच्छति
स्वर्गोऽपीच्छन्ति दातारं सम्यग् सुकृतिकारिणम् ॥५॥
(हारीतस्मृति) इसलिये प्रमाद न करे

अतिथि यज्ञ (मनुष्य यज्ञ) अवश्य करना चाहिये। यदि समय पर कोई भिक्षुक न आया तो उसका भाग भोजन से पहले शुद्ध सुरक्षित स्थान पर रख दे। आने पर हाथ पैर जल से धोकर दे यदि नहीं आवे तो गौ को खिला दे।

भोजन

भोजन स्थान पर जो भूमि शुद्ध गोबर या मिट्टी से लीपी पवित्र आसन ऊन का या पीढ़ा हो। लोह, मिट्टी, पलांश, पीतल, चमड़ा, चारपाई न हो। शरीर पर उत्तम शुद्ध वस्त्र हो पूर्व मुख बैठे। जिसके पुत्र हो वह उत्तर मुख न बैठे पैर आर्द्र (गीले हो) दक्षिण मुख से यश पश्चिम से श्री उत्तर से ऋण की प्राप्ति होती है। हाथ, पैर, मुख पात्र मण्डल और मंडल चतुष्कोण अंगुल अथवा चार अंगुल भस्म या जल से अथवा चूर्ण से अंगुलियों से रेखा बनावे। विना मण्डल अन्न रस को दैत्य पिशाचादि हरण करते हैं उस मंडल पर भोजन पात्र स्थापित करे। पात्र मिट्टी का न हो व लोहा, ताम्बा, कांसा, वट, पिपल, मदार का पत्र और उल्टी पत्री को (पलास का पत्तल उलटा) नहीं चाहिये। सोना, चाँदी, पित्तल, फूल, पलास, पद्म केला के पात्र श्रेष्ठ होते हैं। भोज्य पदार्थ बाँयें हाथ से लेना देना नहीं

चाहिये। भोजन करते समय प्रातः सायङ्काल की सन्धि व मध्य दिन अर्ध रात्रि की संधि न हो, शिर पर वस्त्र न हो, बाँयें हाथ से अन्न पात्र को व शिर पैर वस्ति को स्पर्श न करे न पैर से पादुका जूता गीले वस्त्र तथा परस्पर का स्पर्श भोजन के समय एवं क्रोध विलाप न हो चाण्डाल और कुत्ता न देखे। शूद्र, मुर्दा और सूतक का अन्न न खाय। रात्रि को अन्धकार में बिना दीपक भोजन न करे। मौन होकर भोजन को नमस्कार करे अन्न से तीन ग्रास निकाल ये मंत्र पढ़ता हुआ थाली से दक्षिण भाग में बलि धरे।

ॐ भूः पतये स्वाहा नमः।

ॐ भुवनपतये स्वाहा नमः।

ॐ भूतानांपतये स्वाहा नमः।

और दो बलि ॐ धर्मराजाय नमः।

ॐ चित्रगुप्ताय नमः कहकर दे। पश्चात नैवेद्य को देवता को अर्पण करे। हथेली में जल लेकर अन्न की प्रदक्षिणा करके जल अपने आगे छोड़ दे।

ॐ नाभ्याऽआसीदन्त रीक्षँ शीर्ष्णोद्यौः सम वर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकांअकल्पयन्।

अथवा ओं अमुक देवाय (श्रीकृष्णाय) नैवेद्यं समर्पयामि नमः। हाथ से धेनु मुद्रा दिखाकर आचमन के लिये जल छोड़े। तदनन्तर "ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा" इस मन्त्र से तीन बार आचमन करके पुनः पञ्च प्राणों के पाँच बार सूक्ष्म ग्रास

से मौन होकर मुख में छोड़े, यह भी पञ्च यज्ञ है। ओं प्राणाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ अपानाय स्वाहा ॐ उदानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा पश्चात् ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा इस मन्त्र से आचमन करके यथेष्ट भोजन करे। यथेष्ट भोजन करने के उपरान्त उक्त मन्त्र से आचमन करे। भोजन के अन्त में १ ग्रास पात्र में शेष रहे, वह और तीनों व दोनों वलि उठा कर काक श्वानादि को दे और जो अग्राशन रसोई घर में निकाला गया है, उसको गौ को दे। यह प्राणाग्नि होत्र सब यज्ञों में उत्तम है। इक्कीस कुल की नरक से रक्षा करता है और जन्म जरा मृत्यु से बचाता है दूसरे के हाथ से हाथ में दिया हुआ नमक, हींग, घृत, तेल आदि न खाय।

यदात्मसम्मित मन्नं तद्भवति नहिनस्ति यद्भूयो हिनस्तितत् यत्कनीयो न तद्भवति ऋग्वेद ॥

अन्न से अर्ध पेट भरे एक भाग जल से भरे और एक भाग वायु संचार के लिए खाली रक्खे। भोजन के अन्त में आचमन दन्तमुख आँख हाथ पैर धोना चाहिए। भोजन के बाद १०० कदम चलना चाहिए। मुख शुद्धि के लिए लवङ्ग, हरै, सुपारी आदि किञ्चित् खाना चाहिए। बाँये करवट लेटकर दूसरा करवट लेवे। उदर पर निम्नस्थ मन्त्र से हाथ फेरे—

अकाल मृत्यु हरणं, सर्व व्याधि विनासनम्
विष्णोःपादोदकं तीर्थं जठरे धारयाम्यहम् ॥

अथवा—

अगस्त्य कुम्भकर्ण वडबानल का स्मरण करे। जब तक भोजन पात्र न उठ जाय। और भूमि को धोकर न शुद्ध किया जाय। तब तक भोक्ता अशुचि रहता है। इसलिए शीघ्र ही पात्र तथा पृथ्वी को साफ कराना चाहिए। साफ वस्त्र धारण कर जीविका व्यापार, अथवा ग्रन्थावलोकन, गृह की वस्तुओं की सफाई, सत्पुरुषों का सङ्ग, सात्विक स्वभाव से सत्य व्यवहार और सब सज्जनों के प्रिय होने का प्रयत्न करे। सर्वत्र गुणों का ग्रहण करे।

प्राणं वा एते प्रस्कन्दति ये दिवारत्या संयुज्यन्ते।

(इति अथर्ववेदीय प्रश्नोपनिषद् मन्त्रः)

पुरुष का मुख धर्म ब्रह्मचर्य है। इसलिए ५, ७, ८, १०, १२ वर्ष के भीतर यज्ञोपवीत अवश्य करा लेना चाहिए जनेऊ कराकर ब्रह्मचर्य अवस्था में विद्या कर्म, धर्म, धन बल का सम्पादन करके जो ब्रह्मचारी २४ वर्ष पर अथवा १८, २० वर्ष पर सवर्ण विवाह करके ऋतुकाल में सन्तान उत्पन्न करता हैं। उसकी वह सन्तान, बुद्धिमान्, बलवान, शक्तिमान् तेजस्वी होती है। सर्वदा एक पत्नी वाला हो। पत्नी को वस्त्र भूषण भोजनादि से संतुष्ट रक्खे। यदि स्त्री कुरूप, अङ्गहीन, रोगी हो तो भी दण्ड देने योग्य और त्यागने योग्य नहीं होती। उससे मधुर भाषण करे, और रक्षा करे। बालक को ५ वें वर्ष शुभ मुहूर्त में गणेश नवग्रह

आदि का पूजन कराके विद्यारम्भ करा देना चाहिए। इस लोक परलोक और मोक्ष का विवेकी जो पुरुष अपने वर्ण धर्म जातिधर्म आश्रम धर्म तथा देश कुल शास्त्र गुरु के आचरणों को विधिवत् यथाशक्ति पालन करता हुआ। आयु समाप्त करता है, वह पुनः उत्तमोत्तम गति को प्राप्त होता है। उसका पतन नहीं होता। सायङ्काल को भी स्नान शुष्क भस्म रुद्राक्ष माला कुशपवित्री शिखाबन्धन, आसन पवित्री आचमन प्राणायाम पूर्वक सन्ध्या गायत्री जप या गुरु मन्त्र जप और स्तोत्र पाठ आरती मन्दिरों में दीपक दान करे। जिस घर में दीपक सर्वदा जलता है, उस घर में दरिद्रता नहीं आती। दीपक पूर्वोत्तर मुख रखने से आयु और धन की वृद्धि होती है। प्रथम पहर में जागरण, और द्वितीय प्रहर में भोजन तथा शयन, पूर्व दक्षिण शिर करके करना चाहिए। जल, जूता, छड़ी क्रिया की निवृत्ति के लिए पास में रक्खे। गीले पैर से न सोवे। ईश्वर का स्मरण करता हुआ निद्रा लेवे। शयन काल के आरम्भ में निम्नाङ्कित मन्त्र उच्चारण करे—

जले रक्षतु वाराहस्स्थले रक्षतु वामनः।
अटव्यनरसिंहश्च सर्वतः पातुकेशवः॥
तिस्रोभार्याः कफल्लस्य दाहिनो मोहनी सती।
तासां स्मरण मात्रेण चोरो गच्छति निष्फलः॥

कफल्लकः ३ बार कहकर चुटकी या ताली बजावे।

स्त्री शिक्षा

स्त्रियों को सर्वदा चित्त पति पर ही रखना चाहिये। जैसे श्रीलक्ष्मीजी श्रीविष्णु का और श्रीपार्वतीजी श्रीशङ्करजी का ध्यान करती हैं। उसी प्रकार स्त्रियों को समझना चाहिए कि सर्वदेव सर्वतीर्थ सर्वधर्म तथा ऐश्वर्य हमारे पति ही हैं। पति ही गति है। पति यदि कुरूप निरक्षर रोगी निर्धन भी हो तो अपनी शक्ति और वचन से, प्रिय मीठी वाणी से, शृङ्गार से अपने शरीर तथा वस्त्र की सफाई से प्रसन्न रखना चाहिए। शरीर की सेवा, तथा जल, स्नान, वस्त्र, पूजा पात्र आसन भूमि शुद्धि (लिपाई) सामग्री उपस्थित कर देनी चाहिए। मन बचन शरीर से पति की निन्दा न करे। और दुखित क्रोधित न करे। विना पतित हुए न त्याग करे।

स्त्रियों को चाहिए कि प्रातःकाल पति से पूर्व ही शयन से उठकर पति के चरणों में नमस्कार करे। और शुद्ध होकर हाथ पैर मुख धोकर पति के नित्य नैमित्तिक उपयोगी वस्तुओं को उपस्थित करे। और घर की सफाई करे। शयनादि की शय्या-पात्र वस्त्र सब वस्तु इधर उधर पड़ी न हों। नियम से उनको अपवे २ नियत स्थान पर एकत्रित करे। पाकशाला और पाकशाला के पात्रों की शुद्धि पाचनीय अन्नादि की शुद्धि जल शुद्धि दृष्टिद्वारा करके रखना चाहिये। अग्निकुण्ड में सर्वदा अग्नि रखना, चूल्हे को दोनों समय मिट्टी से पोतना चाहिये।

स्नान तथा शुद्ध वस्त्र पहिनकर भोजन तैयार करें बच्चों तथा श्रेष्ट परिवारिक जनों को भोजन करा पति को भी भोजन कराने के बाद स्वयं भोजन करें। भोजन से पूर्व गो ग्रास अवश्य देवे। सब से प्रेम करें। सभी को सन्तुष्ट रखे। पति को अपने सद्गुण तथा सेवा से सदा सन्तुष्ट रखना चाहिये।

गृह स्वामिनी स्त्री पुरुष बच्चो को तृप्त कराने के पश्चात् पति का जूठा स्वयं भोजन करे। पति के बिना तृप्त हुए स्वयम् न भोजन करे। पति की आज्ञा न टाले। मासिक धर्म होने पर खाद्य पदार्थों का स्पर्श देव पूजन आदि का स्पर्श. पति के साथ शयन ३ दिन तक न करे चौथे दिन विधि पूर्वक स्नान करके शुद्ध होकर पति के मुख को देखे सूर्य का दर्शन करे। मांगलिक वस्तु सिन्दूर, कज्जल दर्पण केशों का संस्कार, शुद्ध प्रक्षालित रंगीन वस्त्र धारण सर्वदा किया करें। कार्य से निवृत्त होने पर पुराण रामायणादि धर्म सम्बन्धी ग्रन्थों को पढ़ना चाहिए। गर्भाधान के लिए चौथा छठवाँ आठवाँ दशवाँ बारहवाँ दिन उत्तम है। सौम्य तिथि, नक्षत्र रात्रि में पति स्त्री का संग करे। इस प्रकार उत्पन्न हुई संतति काना, बहिरा, रोगी, दरिद्री नहीं होती हैं।

अकसर दरवाजे पर वैठना, दरवाजे झरोखे आदि से झाकना। दूसरे के घर अकेली जाना, पति को छोड़कर अन्य पुरुष से वात करना, बहुत हँसना। पर स्त्री पुरुष के भेद (मर्म) प्रकट करना, स्वतन्त्र विचरना, इत्यादि दुर्गुणों से स्त्रियाँ

दूषित हो जाती हैं। पति साथ हो तो भी अन्य पुरुष से बात करने के समय मुख गर्दन सामने झुकाकर वस्त्र की ओट करनी चाहिए।

पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने।
पुत्राः रक्षति वार्धक्येन स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ॥१॥

इसलिए स्त्री को सर्वथा पति के आधीन रहना चाहिए बालक बालिकाओं पर भी माता पिता की दृष्टि सर्वदा रहनी चाहिए। और उन्हें कुसङ्गति से बचावें। बालकों को विद्या, शुभगुण, आचार की शिक्षा प्रदान करावें। बालिका को गृह कार्य में कुशल बनाने के लिए प्रेम पूर्वक घर के कामों में नियुक्त करे। बालकों को बन्दरों की भाँति गोद ही न छिपाये रहे। अपितु उसको पक्षियों की तरह विचरने और धन धर्म बल शिक्षा की प्राप्ति करने को स्वतन्त्र कर दें दूर से रक्षक दृष्टि रखे। विवाह बालिका का १२ वर्ष में हो तो सर्वोत्तम है।

कुलं च शीलं च वयश्च रूपम्,
विद्या च वित्तं च सनाथता च।
एनान् गुणान् सप्तपरीक्ष्यदेया,
कन्या बुधैः शेषमचिन्तनीयम् ॥

आयु अधिक होने पर इन सात गुणों का ही विचार करना चाहिए। बालिका का विवाह उसी अवस्था में कर देना चाहिए। कि जब तक काम पीडन (रजोदर्शन) का भाव उत्पन्न न हो।

बालिका का नाम नक्षत्र नदी फूल पर नहीं रखना चाहिए। इस प्रकार का नाम रखने पर कन्यायें दुखित होती हैं।

विधवा स्त्री को सर्वदा शौच, स्नान, शुक्लवस्त्र धारण करना चाहिए। शिर मुण्डन कराना चाहिए केशों का संस्कार, आभूषण, रङ्गीन वस्त्र, आँखों में अञ्जन, पान, उबटन, तैल मर्दन, विदेश में विचरना, तीर्थयात्रा (माला इत्यादि पहनना) सिन्दूर काँच की चूड़ी, मद्य माँस भक्षण, काँस पात्र में भोजन करने से दोष होता है। स्नान, भस्म लगाना, श्रीविष्णु आदि देवों का पूजन, जप, पुराणों का पाठ, गृहकार्य में निरत रहना, पर्व तिथियों पर उपवास करना, दुष्कर्म न करना, शुद्ध रहना, ये गुण हैं। स्त्रियों को श्रीविष्णुजी या श्रीसूर्यनारायणजी की उपासना करना श्रेयस्कर है। ऐसे दोषरहित गुणों से युक्त स्त्रियाँ देवी हैं। ये संसार को पार कर जाती हैं। असत्य भाषण, छल कपट, लोभ, मूर्खता, वस्त्रों की अपवित्रता दुस्साहस दयाहीनता जिन स्त्रियों में नहीं विद्यमान है, वही स्त्रियाँ देवी हैं। स्त्रियों को कुम्हड़ा (काशी फल) नहीं काटना चाहिए। तथा दीपक को अञ्चल से बुझाना चाहिए। मुख से तथा हाथ से नहीं बुझाना चाहिए। बालकों के लिए दृष्टि (नजर) लगने की रक्षाविधि—

ॐ रक्षरक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर।
ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम॥

इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर बालक के भुजदण्ड में बाँध देना चाहिए।

अभिवादनविधिः

जिस पुरुष का नाम देश और जाति विदित नहीं है उसको नमस्कार न करै। और पाखंडी, पतित, शठ, कृतघ्न, दौड़ते हुए पुरुष को, भोजन करते हुए को, जप करते हुए को, स्नान करते हुए को, ध्यान में स्थित पुरुष को और जो क्षौर, मल-मूत्र त्याग, करके आचमन से शुद्ध न हों उनको नमस्कार न करे। सभा में सब को पृथक् पृथक् नमस्कार न करे। दूरस्थ को, जलस्थ को नमस्कार न करै। देवता की प्रतिमा (मूर्ति) एवं यति (संन्यासी) को देखकर यदि नमस्कार न करे तो प्रायश्चित्त का भागी होता है। बिना नमस्कार किये जो ब्राह्मण स्वतः आशीर्वाद देता है वह चाण्डाल होता है और आशीर्वाद लेने वाला नरक को जाता है।

धर्मेण हन्यते व्याधिः धर्मेण सुखमेधते।
धर्मानुष्ठानमात्रेण योयद्वाञ्छति तस्यतत् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः